छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह – फाल्गुन–चैत्र, संवत् 2075
मार्च 2019

ओ३म्

अंक 162, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

धर्मवीर पं. लेखराम आर्य

भगतसिंह

सभा द्वारा संचालित अग्निदेव आर्य माध्य. विद्यालय एवं डी.ए.वी. पूर्व माध्य. विद्यालय धमतरी में रोटरी क्लब धमतरी द्वारा कम्प्यूटर लैब एवं लायब्रेरी कक्ष का उद्घाटन अवसर की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न ऋषि बोधोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के पावन अवसर पर विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७५
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द - १९५

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
प्र. कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पा क :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १४, अंक ०८ — ओ३म् — मास/सन् - मार्च २०१९

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१.	वह सब सुनता है, देखता है	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	उन्नत समाज का मूलमंत्र है बच्चों में सृजनशीलता	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	श्रेष्ठ एवं आदर्श महापुरुष-ऋषि दयानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	हर्ष एवं उल्लास का पर्व : होली	श्री कृष्णचंद्र टवाणी	१०
५.	सात्विक अन्न सेवन से क्रियाशील बन सबका पालन करें	डॉ. अशोक आर्य	१३
६.	अपने-अपने दुःख	ओमप्रकाश बजाज	१४
७.	"लेखक"	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१५
८.	प्राण-अपान शब्द पर शंका समाधान	डॉ. वेदपाल	२०
९.	शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचंद्र देहलवी जी	डॉ. कन्हैयाल लाल आर्य	२२
१०.	मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा	श्री ऋषि आर्य	२४
११.	नारी के सच्चे आभूषण	श्रीमती कुसुमाङ्गी आर्या	२५
१२.	धर्मवीर पण्डित लेखराम	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२६
१३.	कुष्ठ रोगियों के लिए होम्योपैथी चिकित्सा एक वरदान	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	२९
१४.	समाचार प्रवाह		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वह सब सुनता है, देखता है

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

वेद वेदामृत

न कीमिन्द्रो निकर्तवे, न शक्रः परिशक्तवे।
विश्वं श्रृणोति पश्यति॥ ऋग्. ८.७८.५

ऋषिः कुसुतिः काण्व। देवता इन्द्रः। छन्दः गायत्री।

● (इन्द्रः) परमेश्वर **(निकर्तवे नकीम्)** अपमानित नहीं किया जा सकता, (वह) **(शक्रः)** शक्तिशाली **(परिशक्तवे न)** पराजित नहीं किया जा सकता। (वह) **(विश्वं)** सब कुछ **(श्रृणोति)** सुनता है। **(पश्यति)** देखता है।

क्या तुम समझते हो कि तुम इन्द्र प्रभु को अपमानित और लांछित कर लोगे ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वह महान् प्रभु किसी से अपमानित नहीं हो सकता। तुम भले ही उसकी सत्ता से भी इन्कार करते रहो, उसके विरोध में प्रचार करते रहो, उसकी रची अद्‌भुत सृष्टि के विषय में यह कहते रहो कि यह सृष्टि तो घुणाक्षर-न्याय से बिना किसी रचयिता के बन गई है अथवा जैसे नगर में तरंगे स्वयं उठती है और मिटती है, वैसे ही यह जगत् प्रकृति से स्वयं बनता है और नष्ट होता है, अथवा यह कहो कि जगत् को उत्पन्न-स्थित-नष्ट करना तो प्रकृति का स्वभाव ही है, पर तुम्हारी प्रचारित की हुई ये सब बातें उल्टे उसके पक्ष में ही जाती है। उसके विरोध में तैयार हुई तुम्हारी सब विचार-श्रृंखला एक दिन स्वयं तुम्हें निःसार प्रतीत होने लगती है, और किसी क्षण किसी भी घटना से उद्वेलित हो तुम् पक्के आस्तिक बन जाते हो। तब प्रभु के अपमान में कहा तुम्हारा एक-एक शब्द उसकी विजय-दुंदुभि का नाद करने लगता है। ऐसे ही यदि तुम समझते हो कि इन्द्र प्रभु को पराजित कर लोगे, तो यह तुम्हारी भूल है। वह शक्र है, इतना शक्तिशाली है कि बड़े-बड़े धनुर्धरों से पराजित नहीं हो सकता। उसे पराजित करने के लिए तुम्हारी कमान से निकले हुए तीर उल्टे तुम्हें ही आकर क्षत-विक्षत कर डालेंगे और वह अक्षत मुस्कराता खड़ा देखता रहेगा।

उसकी चमत्कारिक शक्ति तो देखो, वह सब कुछ देखता और सुनता है। तुम कहीं भी, विश्व के किसी भी गुप्त से गुप्त स्थान में जाकर कोई शब्द बोलो, उसे वह सुन लेता है। न केवल वाणी उच्चारण किए गए शब्दों को सुनता है, अपितु वाणी से अनुच्चारित, मन में सोचे गये विचारात्मक शब्द को भी सुन लेने का सामर्थ्य रखता है। उसकी दृष्टि-शक्ति इतनी प्रबल है कि विश्व में कही भी घटते हुए घटनाचक्र को देख लेता है। आओ, हम सब मिलकर उस सर्वश्रोता और सर्वद्रष्टा के चरणों में श्रद्धावनत हो प्रणाम करें और यदि हमने उसे अपमानित या पराजित करने का कभी यत्न किया हो तो उसके लिए उससे क्षमा याचना करें। वह भाव-विभोर हो हमें अपने अंक में भल लेगा, और हमपर अपने कल्याण की वर्षा करेगा।

मन्त्राय-टिप्पणी - १. नि कृ, तुमुन् अर्थ में तवेन्। 2. शक्नोतीति शक्रः। शक्लृ शक्तौ, प्रत्ययः। 3. परि शक्लृ शक्तौ, तवेन्।

सम्पादकीय

उन्नत समाज का मूलमंत्र है बच्चों में सृजनशीलता

सहृदय पाठकों! महान् भाषा वैज्ञानिक निर्वचन शास्त्र के प्रणेता आचार्य यास्क ने बालशिक्षा की शुरुआत के सन्दर्भ में एक शब्द का प्रयोग किया है नेदंविदे यह क्या है कि जिज्ञासा से ही बच्चों को प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर देना चाहिये। ज्ञान प्राप्ति के लिये तैयार मस्तिष्क की यही पहचान है, हम देखते हैं बच्चे स्वभाव से ही सृजनशील होते हैं। उनके सामने जो कुछ भी है वह सब कुछ उनके लिये कौतूहल की चीज है। बच्चे सभी चीजों के विषय में जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर लेना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा ही है जो उन्हें हरदम सचेत रखती है। सफर में जब आप ऊंघते हैं उस समय बच्चा खिड़कियों से बाहर का दृश्य देख रहा होता है। इन दृश्यों को देखते हुए उसके मन में अनेकानेक सवाल उभरते जाते हैं। यदि उसके अभिभावक बाल मनोविज्ञान के जानकार है, बच्चे की जिज्ञासा में रुचि लेते हैं तो बच्चा अभिभावक से सवाल करता है। इस तरह उसकी जानकारी बढ़ती जाती है और उसके मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास होता है।

इसके विपरीत ज्यादातर बच्चों को ऐसा माहौल नहीं मिलता, जहां से अपनी शंकाओं का समाधान कर सके। ऐसे बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को मन ही मन खाते जाते हैं और फिर आगे चलकर उनके मस्तिष्क में जिज्ञासाएँ जन्म लेना ही बन्द कर देती है। ऐसे बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास सम्भव नहीं है। यही नहीं उनमें अन्वेषण और खोजपरक दृष्टि का अभाव हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा की आधुनिक मांटेसरी और किंडरगार्टन पद्धति का विकास इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ है। इन पद्धतियों में बच्चा कक्षा में निष्क्रिय श्रोता नहीं होता। अध्यापक कक्षा का वातावरण कुछ इस तरह बनाता है कि बच्चा अधिक से अधिक सक्रिय रहे। बच्चा अधिक से अधिक सवाल करता है। यह शिक्षक का कौशल होता है कि बच्चे ही बच्चों के सवालों का जवाब भी खोजते हैं। शिक्षक की भूमिका गाइड की होती है।

तीन साल तक का बच्चा एकाकी खेलना पसंद करता है। जबकि इससे अधिक आयु का बच्चे समूह में खेलना पसंद करता है। अभिभावक और शिक्षक को बच्चों की इस तरह की प्रवृत्तियों की जानकारी होनी चाहिए। एकाकी खेलने वाले बच्चों को समूह में रखना चाहिए। बल्कि उन्हें इस तरह के खिलौने दिये जाते हैं जिससे वे एक ही स्थान पर खिलौनों से खेल सकें। इसके विपरीत बड़े बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की

सलाह देते हैं। ऐसी प्रवृत्ति को न जानने वाले कई बार बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की सलाह देते हैं। जो कि अनुचित है। कई बार बच्चों के छोटे मोटे झगड़ों को लेकर अभिभावकों में खूनी संघर्ष तक हो जाता है। जबकि यही बच्चे कुछ ही देर बाद फिर आपस में मिलजुलकर खेलना कूदना शुरु कर देते हैं। इस तरह बच्चों की प्रवृत्ति को न जानकर लोग बच्चों के लिये व्यर्थ ही परेशानी मोल ले लेते हैं। कई बार जब बच्चों के बीच छोटी-मोटी किसी बात पर ठन जाती है तो अभिभावक कूद पड़ते हैं और अपने की गलती के बावजूद दूसरों पर आरोप लगाने से बाज नहीं आते, बच्चों की अवांछित तरफदारी बच्चे को सुधारने के बजाय बिगड़ने में सहायक होता है। यह तथ्य जब अभिभावक समझते हैं तब तक काफी देर हो चुकी होती है। वहां पश्चाताप के सिवा और कोई चारा नहीं रहता।

वास्तविकता यह है कि आज न तो घर में और न ही स्कूल में ही ऐसा वातावरण है जहां बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। स्कूलों में किताबी सूचनाएँ ठूंस ठूंस कर बच्चों के मन मस्तिष्क में भरी जाती है। स्कूलों में खेलकूद एवं अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं का पूर्ण अभाव देखा जाता है। करके सीखने के सिद्धान्त केवल किताबों में ही सीमित रह गए हैं। विज्ञान-शिक्षा जो पूर्णतया प्रायोगिक ज्ञान पर ही आधारित है, वहां भी सैद्धान्तिक ज्ञान ही अधिक दिया जाता है। विज्ञान के उपकरण और प्रयोगशालाओं का पूर्ण अभाव देखा जा रहा है। जहां ये चीजें है भी वहां प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी में प्रवेश के बाद भी देश में अभी भी अधिकतर अन्धविश्वास का बोलबाला है। भूतप्रेत अभी भी यहां डेरा जमाएं बैठे हैं। जाति-पाति जैसे दकियानूसी और सड़ीगली परम्पराएँ दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से फल फूल रही है।

बच्चों की जिज्ञासाओं के स्वस्थ समाधान के लिए साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दी क्षेत्र में बाल साहित्य को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है। स्तरीय साहित्यकार बाल साहित्य लिखना अपनी तौहीन समझते हैं। जो कुछ साहित्य लिखा भी जा रहा है वह या तो बच्चों के स्तर से ऊपर का है या अवैज्ञानिक है। कामिक्स बच्चों में आज तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लेकिन कामिक्स की कथावस्तु में भूतप्रेत, सुपरमैन, परियां, अलौकिक घटनाएँ और चमत्कार ही छापे हुए हैं। कामिक्स में जो कहानियां लिखी जाती है उनका व्यवहारिक जीवन से कोई सरोकार नहीं होता। फलतः ऐसे कामिक्स बच्चों के कोमल मस्तिष्क के विकास के बजाय उसमें विकृति ही पैदा करते हैं।

कुछ न कुछ सृजन क्षमता प्रत्येक बालक के संस्कार में होती है। आवश्यकता केवल उसके विकास की पड़ती है। अपनी रुचि का विषय होने के कारण बालक उस विषय में दिये गये ज्ञान को शीघ्र आत्मसात् कर लेता है। क्योंकि उस विषय में उसकी सृजन-क्षमता विकासोन्मुख होती है। कुशल शिक्षक बालक की रुचि एवं उसकी प्रकृति-प्रदत्त प्रतिभा का पूर्ण लाभ उठाते हुए तद्नुकूल उसकी सृजन-क्षमता का विकास करता है। रुचि एवं प्रकृति के प्रतिकूल सृजन के विकास का यत्न करना ऊसर को बीज बोने के समान ही है। इस यत्न में न तो शिक्षक को सफलता प्राप्त होती है, न ही बालक की। सृजन के अनेक पक्ष हैं, इनमें से प्रमुख पक्षों का संक्षिप्त विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुछ बालक छात्रावस्था से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। उनमें काव्य, कहानी, निबन्ध, नाटक या समीक्षा लेखन की पूर्ण प्रतिभा होती है। कुछ वाद-विवाद या भाषण देने की कला में पटु होते हैं। ऐसे साहित्य-प्रेमी

बालकों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार साहित्य के किसी एक क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान देकर उन्हें स्वस्थ-साहित्य-सृजन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। इस प्रकार देश में अनेक कवि, लेखक, समीक्षक एवं तर्कशास्त्री उत्पन्न होंगे जो देश की साहित्यिक प्रगति में योगदान करके इसका गौरव बढ़ायेंगे।

कलायें दो प्रकार की होती है -१. ललित कला २. उपयोगी कला। ललित कला में साहित्य, संगीत, गायन, वादन एवं चित्र कला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपयोगी कक्षा में- बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी, राजगीरी, चर्मकारी, एवं बुनकरी का नाम आता है। दोनों प्रकार की कलायें मानव-जीवन के लिये आवश्यक होती है। ललित कलाओं से आनन्द, यश और धन की प्राप्ति होती है तथा उपयोगी कलाओं में जीविका की। देश की बहुमुखी प्रगति के लिये दोनों प्रकार की कलाओं का सृजन आवश्यक होता है। अतः अध्यापकों को चाहिये कि जिस छात्र की रुचि जिस कला में हो उसे उस विषय का सम्यक् ज्ञान देकर उसकी सृजन क्षमता का विकास करें।

अनेक बालक विज्ञान के प्रति आरम्भ से ही जिज्ञासु होते हैं। वे प्रकृति के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं उसकी शक्तियों का सदुपयोग कर संसार को कोई नया आविष्कार दे जाने की क्षमता रखते हैं। उनमें भी कुछ जीव-विज्ञान, कुछ भौतिक विज्ञान और कुछ रसायन विज्ञान में अभिरुचि रखते हैं। प्रयोग द्वारा समस्त पदार्थों, रसायनों और जीवों का सूक्ष्म अध्ययन करना उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। ऐसे छात्रों की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाकर उन्हें उचित निर्देशन द्वारा वैज्ञानिक-सृजन के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार संसार को अच्छे वैज्ञानिकों और अनेक नये आविष्कारों की प्राप्ति होगी, जिससे मानव-मात्र के कल्याण का पथ-प्रशस्त होगा।

बालकों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति स्वाभाविक रुप से होती है। यह प्रवृत्ति ही तकनीकी सृजन की जन्मदायिनी है। विभिन्न मशीनों के पुर्जों का उपयोग कर कोई नई मशीन बनाना, या पुर्जों का बनाना, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि उस कार्यों में उपयोग करना, जिनमें उनका पहले प्रयोग न किया गया हो। यह सब तकनीकी सृजन के अन्तर्गत आते हैं। कल-पुर्जों, वाहनों और संचार-साधनों की सफाई का मरम्मत करना, ठोस-द्रव और गैस के प्रयोग से कोई उपयोगी उत्पादन करना भी तकनीकी सृजन कहा जायेगा। कुछ बालकों में पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति कम, टेक्नालॉजी की अधिक होती है। उन्हें इसी ओर मोड़ना चाहिए। टेक्नोलॉजी विज्ञान का ही एक अंग है। देश की औद्योगिक प्रगति के लिये इस रुचि के बालकों में तकनीकी सृजन की क्षमता का विकास करना कुशल शिक्षक का काम है।

देश की आर्थिक प्रगति के लिए विभिन्न उद्योग-धंधों का विकास आवश्यक होता है। उद्योग-धंधों का विकास तभी संभव होगा, जब बालकों में औद्योगिक-सृजन की क्षमता उत्पन्न की जाए। औद्योगिक-सृजन में बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के उत्पादन की ही नहीं, छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापक को चाहिये कि ऐसे बालकों के स्वभाव का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करें कि वह किस उद्योग में अभिरुचि रखता है? जिसमें उसकी रुचि हो उसी उद्योग के विभिन्न आयामों का ज्ञान देकर उसे औद्योगिक-सृजन में दक्ष करना चाहिये। इस प्रकार देश में हर प्रकार के सृजनकर्ता उत्पन्न होंगे जो अपने-अपने सृजन द्वारा राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकेंगे। अतः आइये अपने भावी कर्णधारों के सही अर्थों में निर्माण की दिशा में हम जहाँ कहीं भी जिस किसी क्षेत्र में जीवन यापन कर रहे हों किन्तु यदि इस दिशा में सन्तति को आगे बढ़ाने में सफल हो सके तो निश्चित ही कल एक स्वर्णिम समाज हमारे सामने होगा।

- आचार्य कर्मवीर

विवेचनात्मक 'श्रेष्ठ एवं आदर्श महापुरुष-ऋषि दयानन्द'

ऋषि दयानन्द संसार के मनुष्यों व सभी ज्ञात महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष हैं। इसके अनेक कारण एवं प्रमाण हैं जिनके आधार यह निष्कर्ष निकलता है। महाभारतकाल वर्तमान से लगभग 5,200 वर्ष पूर्व है। महाभारत काल के बाद ऐसे अनेक पुरुष व महापुरुष हुए जिनके बारे में देश व संसार के लोगों की अलग अलग राय है। एक व्यक्ति को कुछ लोग अपना महापुरुष मानते हैं तो दूसरे अनेक कारणों से उसके महापुरुष होने का खण्डन करते हैं। किसी ने एक मत का प्रचार किया तो दूसरे ने दूसरे व अन्य मतों का प्रचार किया। कोई भी मत संसार में सर्वमान्य नहीं है। वेदों के आधार पर यदि समीक्षा करें तो सभी मतों में कमियां व अज्ञान मिश्रित मान्यतायें पाई जाती हैं जिसका कारण मत पंथों के आचार्यों व उनके ग्रन्थों के प्रणेताओं का अल्पज्ञ व सीमित ज्ञान वाला वा अविद्यायुक्त होना है। हम यह भी जानते हैं कि यदि हम ज्ञानशून्य वा अपूर्ण ज्ञान वालें होंगे तो हमारे कर्म कभी भी पूर्ण फलदायक नहीं हो सकते। इसके लिए पूर्ण सत्य व यथार्थ ज्ञान की आवश्यक सभी मनुष्यों को अभीष्ट है। ऐसे 'स्वतः प्रमाण' ग्रन्थ संसार में केवल चार वेद ही हैं जो सषष्टि के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न हुए थे। वेदों की यह विशेषता है कि यह सभी सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। इनकी कोई मान्यता व सिद्धान्त सषष्टिकम के विरुद्ध नहीं है। संसार में सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान का आधार भी यह वेद ही हैं। यह तथ्य है कि यदि संसार में वेद न होते तो अतीत और वर्तमान में ज्ञान व विज्ञान का विकास व विस्तार न हुआ होता।

संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु ज्ञान होती है। संसार में वेद ज्ञान के प्राचीनतम वा आदि ग्रन्थ हैं। आज से लगभग 1.96 अरब वर्ष पूर्व सषष्टि की रचना होकर मानव की उत्पत्ति हुई थी। तभी ईश्वर ने आंदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे सभी ऋषि आध्यात्मिक मनुष्य थे जो मन, वचन व कर्म से पवित्र होने के साथ त्याग भाव से जीवन व्यतीत करते थे। उनके अन्दर स्वार्थ भाव, काम,

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष व परिग्रह आदि की भावना नहीं होती थी। सभी पूर्ण व विशुद्ध शाकाहारी होते थे। वह पशुओं से भी उसी प्रकार प्रेम करते थे जैसे कि मनुष्यों से। ऋषियों का स्थान राजा से भी ऊपर होता था और सभी राजा व राजपुरुष ऋषियों का सम्मान करते थे। दलगत राजनीति का अस्तित्व उन दिनों नहीं था। वेदानुसार ही राजा को शासन चलाना होता था। ऋषियों व प्रजाजनों का सारा समय या तो ईश्वर के ध्यान व चिन्तन में व्यतीत होता था या फिर देश व समाज के उत्थान वा कल्याण के कार्यों में। प्राचीन भारत ज्ञान विज्ञान सम्पन्न था। भौतिक सुख सुविध ााओं को वह मनुष्य जीवन में सीमित महत्व देते थे। आजकल के विलासी लोगों की तरह उस समय के ऋषि व प्रजाजन नहीं थे। उसी परम्परा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी हुए। उन्होंने भी 14 वर्ष की अवस्था से ज्ञान प्रति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। सांसारिक बन्ध ानों से मुक्त होने के लिए ही उन्होंने 21 वर्ष की अवस्था में गष्ह त्याग कर दिया था। वह सच्चे व सिद्ध योगी बने और सन् 1863 में गुरु विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में उनका वेदादि शास्त्रों व व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन पूरा हुआ। इससे पूर्व का उनका जीवन भी पूर्णतः त्याग भाव का जीवन था और बाद का जीवन भी त्याग भाव के साथ देश की उन्नति सहित मनुष्यों को अज्ञान से छुड़ाकर सत्य ज्ञान को प्राप्त कराने में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने ही लोगों को ईश्वर के सच्चे स्वरूप से परिचित कराया। उनसे पूर्व यह ज्ञान वेदादि सत्य ग्रन्थों में सीमित व बन्द था। संस्कष्त में होने से आम देशवासी इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। स्वामी दयानन्द जी ने इसे पहली बार आम आदमी की बोलचाल की भाषा आर्यभाषा हिन्दी में प्रस्तुत कर संसार में एक बहुत बड़ी क्रान्ति की थी। जो ज्ञान हमारे बड़े–बड़े ध र्माचार्यों को भी उपलब्ध नहीं था, वह महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के द्वारा जनसामान्य तक पहुंचाया जो इन्हें पढ़कर धर्म, ईश्वर, आत्मा व सषष्टि को यथार्थ रूप से जान सके।

महर्षि दयानन्द श्रेष्ठ आदर्श पुरुष इस लिए थे कि उन्होंने जो भी कार्य किये वह प्रायः सभी अभूतपूर्व कार्य थे। उनके समय में स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधि

ाकार नहीं था। उन्होंने वेदों का प्रमाण देकर स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। यह भी महाभारतकाल के बाद की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस अभूतकार्य के कारण भी वह आदर्श पुरुष सिद्ध होते हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके समय में चारों वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। देश में उस समय तक पुस्तक व ग्रन्थ रूप में उनका प्रकाशन नही हुआ था। हस्तलिखित ग्रन्थ ही यत्र तत्र किंही के पास सुरक्षित रहे होंगे। स्वामी जी ने उन्हें ढूंढ कर प्राप्त किया। दुःख की बात है कि जिस व्यक्ति से सम्भवतः धौलपुर से उन्हें चार वेद मिले उसका ज्ञान भी हमें नहीं है। यदि उनके किसी शिष्य ने उनसे पूछ लिया होता तो आज हमें यह ज्ञात होता कि ऋषि दयानन्द को वेद उपलब्ध कराने वाले कौन महानुभाव थे। ऋषि दयानन्द की एक अन्य विशेषता यह थी कि वह वेदों के मर्मज्ञ व यथार्थ अर्थों को जानने वाले थे और उन्होंने इस ज्ञान को अपने तक सीमित न रखकर सर्वत्र प्रचार किया जिनसे ईसाई व मुस्लिमों सहित कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता था वा हुए भी। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थ करने वाले विद्वान नहीं हुए, सायण व महीधर के जो भाष्य मिलते हैं उनके अनेक प्रकार से अनर्थ किया गया और वेदों के प्रामाणिक अर्थ न होकर लौकिक व यज्ञपरक अर्थ किये गये जिनसे वेदों का महत्व बढ़ने के स्थान पर घटा और जिसका लाभ अंग्रेजों ने भारत में ईसाईमत के प्रचार में किया। महर्षि दयानन्द ने वेदों के सत्य अर्थ करके उनकी योजना को विफल कर दिया था।

स्वामी दयानन्द जी के कुछ ग्रन्थों का उल्लेख हम कर चुके हैं। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नगर–नगर ग्राम–ग्राम घूम कर वेदों का प्रचार किया। स्वामी दयानन्द जी से पूर्व स्वामी शंकराचार्य जी हुए परन्तु उन्होंने वेदों पर न तो कोई ग्रन्थ ही लिखा और न वैसा प्रचार ही किया जैसा दयानन्द जी ने किया। हां, वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अपने समय में बहुत बड़े रक्षक थे जिसके लिए यह देश उनका सदैव ऋणी है। स्वामी शंकराचार्य जी की कुछ मान्यतायें भी वेद व वैदिक परम्परा के विरुद्ध थी जिनमें से एक नारी जाति के प्रति उनके विचार थे। स्वामी दयानन्द जी ने अपनी दिव्य, ईश्वर प्रदत्त बौद्धिक व शारीरिक शक्ति का उपयोग कर आर्यजाति के पतन के कारणों पर भी विचार किया था। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि इसका कारण वेदों का अध्ययन व अध्यापन न होना था। इसके साथ अज्ञान वं अन्धविश्वासों सहित मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद, यथार्थ वर्णव्यवस्था का अव्यवहार व अप्रचलन, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित स्वयंवर विवाह का न होना, ब्रह्मचर्य–नाश, विषयासक्ति, सती प्रथा, पुराणों का प्रचार व व्यवहार तथा प्रक्षिप्त मनुस्मृति के अनेक अविद्यायुक्त कथन आदि थे। इन सभी कारणों को दूर करने के लिए उन्होंने आन्दोलन किया जिसे उन्होंने वेद प्रचार का नाम दिया। देश की आजादी में भी प्रमुख भूमिका स्वामी दयानन्द जी की ही है। उन्होंने ही आजादी व स्वराज्य का मन्त्र दिया था। अंग्रेजों को उन्होंने यह कहकर ललकारा था कि यदि श्री कृष्ण जैसे वीर पुरुष होते तो अंग्रेज इस देश को छोड़कर भाग जाते। स्वामी दयानन्द ने देश व समाज को ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप बताया और उसकी उपासना की सरल व लाभकारी विधि बताई। यज्ञों के वैज्ञानिक पक्ष को सामने रखकर उन्होंने उसका प्रचार किया व उसे प्रत्येक गृहस्थी का दैनन्दिन कर्म घोषित किया। उन्होंने माता–पिता व आचार्य जनों की यथार्थ पूजा सहित देश भक्ति का स्वरूप भी अपने वचनों व ग्रन्थों के द्वारा प्रस्तुत किया है। शिक्षा पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि एक षडयन्त्र के द्वारा उनकी अल्पायु में मृत्यु होने पर भी उनके शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज और लाला लाजपत राय जी आदि ने गुरुकुल व दयानन्द वैदिक स्कूल के माध्यम से देशोत्थान का प्रशंसनीय कार्य किया।

स्वामी दयानन्द जी ने देश व समाज उत्थान के इतने कार्य किये कि जिनकी चर्चा करते जायें तो वह शायद समाप्त ही न हो। भारत में आद्यौगिक क्रान्ति का स्वप्न भी उन्होंने ही सर्वप्रथम देखा था व उसके लिए उन्होंने प्रयास भी किए थे। गोहत्या के लिए उन्होंने जनान्दोलन करने के साथ हिन्दी रक्षा व उसके सरकारी कार्यों में प्रयोग को लेकर भी उन्होंने अपूर्व जनान्दोलन आदि कार्य किये। संस्कृत व गुजराती का विद्वान होते हुए भी उन्होंने हिन्दी सीखी और अपने सभी ग्रन्थों को हिन्दी में उपलब्ध कराया। उनके यह ऐसे कार्य हैं जिनसे वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष सिद्ध होते हैं। उन्होंने किसी भी बात में अपने व पराये का पक्षपात नहीं किया। संसार व प्राणी मात्र के हित के लिए उन्होंने अपना जीवन आहूत किया। आज भारत विश्व में अध्यात्म के क्षेत्र में एकमात्र देश है जिसका श्रेय ईश्वर की सत्य उपासना व जीवात्मा का सत्य स्वरूप प्रस्तुत करने के कारण उन्हीं को है। योग व प्राणायाम आदि को भी उन्होंने ही अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्रचारित किया। सन्ध्या योग का ही पर्याय है। उनका अपना शरीर भी स्वस्थ, आकर्षक, सुन्दर व अद्वितीय था। यह सभी बातें उन्हें विश्व का सर्वोच्च महामानव सिद्ध करते हैं। इसी के साथ हम इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

पर्यावरण हर्ष एवं उल्लास का पर्व : होली

- **कृष्णचंद टवाणी**

आनन्द और सुख-भोगों में पड़कर जीवन विलास-प्रिय और आलसी न बन जाए, यह होली का दिव्य संदेश है।

सांस्कृतिक होली : होली का सांस्कृतिक स्वरुप, पवित्रता और प्रेम का प्रतीक है। पवित्र जीवन की दृढ़-शिला पर उन्नति का भव्य भवन खड़ा होता है। पवित्रता का मेरुदण्ड सत्य है। महापुरुषों से अनुभव से छनकर एक निश्चित सिद्धान्त निकला है - **"सत्यमेव जयते नानृतम, सत्येन पन्था वितते देवयानः।"**

सत्य की सदा विजय होती है। असत्य की नहीं। सत्य दिव्य लोगों की प्राप्ति का मार्ग है। एक पुरानी कहावत है - सांच को आंच कहाँ ? होली अपनी सहस्रों से इस कहावत की प्रतिष्ठा करती है। प्रहलाद ने प्रेम और पवित्रता का नारा ऊंचा उठाया था। समता के व्यवहार से वह जन-जन का हृदय-सम्राट बन गया। सेवा की वेदी पर उसने अपना जीवन चढ़ा दिया और भक्ति तथा सत्य के मंगल मार्ग पर अग्रसर हुआ। साम्राज्यवादी हिरण्यकशिपु, अपने ही पुत्र की लोकप्रियता को न देख सका।

प्रहलाद के उदार और सम व्यवहार से उसे अपनी आसुरी नीति के अंत होने की आशंका हो गई। असाम्य, घृणा, अत्याचार और निरंकुशता के सन्मुख प्रहलाद सत्याग्रह करके खड़ा हो गया। हिरण्यकशिपु की दमन नीति प्रहलाद को विचलित न कर सकी। अंत में प्रहलाद को जला देने के लिए होलिका उसे गोदी में लेकर बैठ गई। सत्य की महिमा अपार है। होलिका अपनी ज्वालाओं में जल गई और प्रहलाद ज्यों का त्यों रहा - **"सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्"** जनता के सेवकों को सत्य की नाव पर लगाती है।

आनन्द की बौछारें :- सत्य के साथ-साथ होली सुंदरता का भी संदेश देती है। सुंदरता का मूल-मंत्र प्रसन्नता है। मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनने के लिए जितनी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि की आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक आवश्यकता है प्रसन्नता की। प्रसन्नता ही जीवन है, वह सौभाग्यशाली है, जिसके मुख पर प्रसन्नता खेलती है। जीवन में सत् और चित्त का भाव रहता है परन्तु आनंद किसी ही भाग्यवान को प्राप्त होता है। आनन्द के मिलते ही जीव सच्चिदानन्दमय हो जाता है।

क्षुद्र और संकीर्ण जीवन में आनन्द नहीं रहता, निराशा, मलिन और उदास जीवन से मृत्यु का बल बढ़ता है। होली आनन्द की बौछारें से जीवन को तर कर देती है, सृष्टि के बीच में लाकर मनुष्य को उमंग और उत्साह से भर देती है। सार्वजनिक उत्सव से संगठित-शक्ति, प्रेम और सद्भावना का उपहार देती है।

जीवन का आदर्श :- जिसे चाह और चिंताओं से छुट्टी नहीं मिलती, वह सबसे बड़ा रोगी है। जिसके मन में धुन लग जाता है वहीं दुःखी है। आलसी, शिथिल, दीन, प्रगतिहीन और निस्तेज होकर जीना केवल सिसकते हुए सांस लेना है, उसमें जीवन नहीं होता। जीवन का दर्शन वहां होता है, जहां कर्म का बोझ मन और बुद्धि को नहीं झुका पाता। उमंग और उत्साह के हाथ-पैर नहीं टूटते, प्रसन्नता कुम्हलाती नहीं और आत्मा सदा हंसती खेलती रहती है।

प्रेम :- होली उत्सव में जितना स्थान प्रसन्नता को मिलता है, उससे अधिक प्रेम को दिया जाता है। अपनी ही प्रसन्नता नहीं, प्रेम और सद्भावना से सबकी प्रसन्नता होली का ध्येय है। भारतीय संस्कृति में **वसुधैव कुटुम्बकम्** की विराट कल्पना है। उदार पुरुषों के लिए सारा विश्व अपना ही परिवार है। संसार में सब अपने हैं, कोई दूसरा नहीं है। इस महाभाव का रचनात्मक रुप होली के उत्सव में देखा जाता है। प्रेमपूर्वक अपरिचित सबको हृदय से लगाकर सद्भावना सहित पुष्पमाला पहनाना, चंदन-गुलाल, अबीर

आदि मांगलिक चिन्ह लगाना-परस्पर प्रेम, मैत्री, मुदिता के द्योतक हैं। उन्नत राष्ट्रों में प्रेम और सद्भावना की सहस्रमुखी धाराएँ बहती है। प्रेम परमेश्वर का रुप है। प्रेम के बिना संसार सूना और नीरस है।

ऊँच-नीच के भेदभाव, राग-द्वेष, प्रान्तीयता और दलबन्दी को होली की पवित्र अग्नि में भस्म कर देने से दशों दिशाओं में प्रकाश, प्रेम और मंगल भर जाता है। कठोर और अश्लील शब्द बोलने, किसी का हृदय दुखाने और उन्मत होने में होली नहीं है। होली आती है- खेलने-कूदने और प्रसन्न होने के लिए हृदय के कोने-कोने का मैल धो डालने के लिए विश्व को शांति, प्रेम, मैत्री, करुणा और मुदिता के एक रंग में रंग देने के लिए। राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए जिस प्रेम, सद्भावना, चरित्र, उत्साह, कर्मशीलता और प्रसन्नता की आवश्यकता है, उसे जुटा देने के लिए होली का उत्सव है।

आदर्श होली मनाएँ :- होली आनन्द और मनोरंजन का पर्व है इसे भारतीय संस्कृति के अनुरुप निम्न बातों को ध्यान में रखकर आदर्श होली के रुप में सभी को मिलजुलकर मनाना चाहिए।

- इस अवसर पर शराब, आतिशबाजी एवं डी.जे. म्युजिक आदि में व्यर्थ में खर्च होने वाली राशि का जरुरतमंदलोगों के लिए भोजन-नाश्ता आदि में खर्च कर मनाना चाहिए।
- चेहरे भले ही रंग बिरंगे हों लेकिन मन बदरंग न हो किसी को भी बदले की भावना से परेशान नहीं करें।
- विद्यालय इत्यादि में वाद-विवाद, चित्रकला, भाषण इत्यादि प्रतियोगिता आयोजित कर होली के त्यौहार में आयी विकृतियों के दुष्प्रभाव को समझावें।
- आंखों में गुलाल तथा बालों में सूखे रंग नहीं डाले।
- प्रेम और भाई चारे की भावना से मिलजुलकर आदर्श होली मनावें। एक दूसरे को प्रेम पूर्वक गुलाल, अबीर लगावें। लिलाट पर चंदन लगावें तथा रसायनिक रंगों, पेन्ट कीचड़ आदि का प्रयोग बिल्कुल न करें। इससे आपस में लड़ाई होती है तथा प्रेम के स्थान पर द्वेषता बढ़ती है।
- आजकल छतों से राहगीरों पर पानी भर गुब्बारे फैंकने का प्रचलन भी बढ़ रहा है इससे शरीर पर चोट आने की संभावना होती है अतः इस प्रथा का भी परित्याग करना चाहिए।
- इस अवसर पर भांग मिश्रित ठंडाई लोगों को जबरदस्ती नहीं पिलावें।
- कई व्यक्ति इस पर पर्व पर शराब आदि का सेवन कर अश्लील हरकतें भी करते हैं जों शोभनीय नहीं है। शिष्टाचार पूर्वक युवतियों से रंग व गुलाल से होली खेलना चाहिए। महिलाओं से अत्यधिक मजाक करते हुए उनके अंगों को स्पर्श करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अश्लील गीत सुनाकर एवं चित्र दिखाकर महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस त्यौहार पर फुहड़ता को त्यागकर धार्मिक भजन, रसिया आदि सुनाकर पवित्र एवं धार्मिक भावना से आदर्श होली मनाना चाहिए।

इस त्योहार के अवसर पर वर्तमान में दुष्कर्म, हत्यायें, गुण्डागर्दी, आगजनी, लूटमार, भद्दे अश्लील गीतों का गायन, कीचड़-पेंट लगाने की प्रथा आदि जो विकृतियां प्रचलित हो गई है उसे रोकना बहुत जरुरी है। समाज सुधारकों एवं संस्थाओं को इस अवसर पर उपर्युक्त बातों का ध्यान में रखने के लिए अधिकाधिक प्रचार करना चाहिए ताकि हम इस आनन्द के त्यौहार को उल्लास एवं हर्ष के साथ मनाकर भरपूर मनोरंजन कर सकें।

पता - प्रधान सम्पादक, अध्यात्म अमृत, सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़ (राज.) ३०५८०१

: उपयोगी जानकारी :

हृदय की ब्लाक नसें (नली) खोलने का नुस्खा

१ ग्राम दाल चीनी, १० ग्राम काली मिर्च, १० ग्राम तेजपत्ता, १० ग्राम मगज (खरबूजे के बींज), १० ग्राम मिश्री, १० ग्राम अलसी और १० ग्राम अखरोट। इस कुल ६१ग्राम सामग्री को बारीक पीसकर रोज सुबह खाली पेट गुनगुने पानी से लें। इसके बाद एक घंटे कुछ भी पदार्थ न लें, चाय भी नहीं। *- मृदुल जोशी, सहारनपुर*

पवित्र होली का त्यौहार मनाओ

बड़े भाग्य से होली आई ।
इसने सबकी सोई मस्ती जगाई ॥
धरती सज धज मुस्काई ।
फसल लहर-लहर लहराई ॥
फिर क्यों न सब मिलकर ।
हर्षित हो नाचो खुशी मनाओ ॥
पवित्र होली का त्यौहार मनाओ...
रंगों से भर पिचकारी लाओ ।
आपस में फिर रंग लगावो ॥
खूब अबीर गुलाल उड़ाकर ।
अपना प्रबल प्रेम दिखलावो ॥
आपस के मतभेद भूलाकर ।
दुश्मन को भी गले लगाओ ॥
पवित्र होली का त्यौहार मनाओ...
प्रेम भाव से मिलकर जुलकर ॥
चंग बजाओ रसिया गाओ ।
मधुर मधुर मिष्ठान बनाओ ॥
प्रेम पूर्वक सबको खिलाओ ।
वासनाओं को दूर हटाकर ।
होली का आदर्श त्यौहार मनावो ॥
पवित्र होली का त्यौहार मनाओ...

o-o

रचयिता : कृष्णचन्द्र टवाणी
पता - प्रधान सम्पादक, अध्यात्म अमृत, सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़ (राज.) ३०५८०१

प्राणों से प्रिय प्रभु

- ओम प्रकाश आर्य

प्राणों से प्रिय प्रभु, हर हृदय में छिपा,
उसे बाहर जगत् में, तू क्यों खोजता ?
मन्दिरों, मस्जिदों, दूर स्थानों में,
नाना कष्टों को जाकर तू क्यों भोगता ?
सर्वव्यापक है प्रत्येक कण में रमा,
सारा ब्रह्माण्ड उसकी शक्ति से है थमा,
रात में देख निस्सीम जगमग गगन,
किसी स्थल विशेष में ही क्यों सोचता ?
करना चाहो अगर उसकी अनुभूति को,
साधना-योग करो, तंज प्रतिमूर्ति को,
मूर्ति में वह मिलेगा, कभी भी नहीं,
व्यर्थ उसके समक्ष तू क्यों लोटता ?
कोई भी वस्तु उसको नहीं चाहिए,
भले बहुमूल्य धातु अर्पित कर आइए,
वेद-अनुसार स्वरुप जाने बिना,
उसके दर्शन की लिप्सा में क्यों दौड़ता ?
बाह्य आडम्बरों से बहुत दूर वह,
उर में खोजो प्रकाश से भरपूर वह,
मिलेगा वह सदा अपने अन्दर ही में
फित तू बाहर निराशा, आंसू क्यों पोंछता ?
उसको जाने बिना मानता ही रहा,
जिन्दगी भर अकर्म साधता ही रहा,
वेदपथ पर कदम को बढ़ाए बिना,
उस प्यारे प्रभु को तू क्यों कोसता ?

oo--oo

पता : आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा (राज.) ३२३३०७

उपादेयात्मक सात्विक अन्न सेवन से क्रियाशील बन सबका पालन करें

- डॉ. अशोक आर्य

हम सदा सात्विक अन्न का सेवन करें। सात्विक अन्न के सेवन से क्रियाशीलता बढ़ती है। क्रियाशील व्यक्ति ही शुभ कर्म कर सकता है। क्रियाशील व्यक्ति ही अन्य लोगों का पालन कर सकता है। हम ऐसा ही बनें, इस बात को ऋग्वेद के प्रथम मण्डल् के इस तृतीय सूक्तसे प्रथम मन्त्र में इस प्रकार बताया गया है -

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती।
पुरुभुजा चनस्यतम् ॥ ऋग्वेद १.३.१

१. सात्विक भोजन :- इस मन्त्र में जो प्रथम प्रार्थना की गयी है, आश्विन कुमारों से जो प्रथम चीज मांगी गई है, वह है सात्विक भोजन। सात्विक भोजन की मांग करते हुए प्रार्थना की है कि हे प्राणपाणों ! मैं यज्ञशील बनना चाहता हूँ, इसलिए आप ऐसी व्यवस्था करें कि मैं यज्ञशील बनने के लिए सात्विक अन्न खाने की ही इच्छा करुं। सात्विक भोजन एक ऐसा साधन है जिससे शरीर के विकार पैदा ही नहीं हो पाते तथा जो पहले से होते हैं, वह भी दूर जाते हैं। शारीरिक व्याधियों से इबचे हुए हम भली प्रकार से यज्ञ आदि कर्म कर सकते हैं। इसलिए प्रभु हमारे लिए ऐसा अन्न दो, जो सात्विक हो, हम ऐसे अन्न का ही सदा सेवन करें। सात्विक अन्न के सेवन से हमारी बुद्धि भी सात्विक होती है। सात्विक बुद्धि ही जीवन को यज्ञमय बनाने का कार्य करती है। इसलिए हम सदा सात्विक भोजन करें।

२. क्रियाशील हो शुभ कार्य करें :- सात्विक भोजन करने वाले प्राणपान स्वयमेव ही सुरक्षित हाथ में चले जाते हैं। इस मन्त्र में भी यही कामना की गई है कि हे प्रभु ! सात्विक भोजन करने से हमारे प्राणपान सात्विक होने पर हम गतिशील हाथों वाले हों, क्रियाशील हों, कार्यशील हो, अकर्मण्यता से, कार्य से मन चुराने से सदा दूर रहें। इस प्रकार हम जो क्रियाशील बन कर भी हम ऐसी क्रिया करें, ऐसे कार्य करें, जो शुभ हो। हम अपने करों से सदा शुभ कर्म ही करें। इस प्रकार हम शुभ कर्मों के प्रति, अधिपति, साधक और अधिकारी बनें। हम जो भी कर्म करें, जो भी कार्य करें, जो भी क्रिया करें, उसका परिणाम शुभ ही हो अर्थात् हमारी क्रियाशीलता से सदा शुभ ही शुभ प्रकट हो, दिखाई दे। हम अपनी क्रियाशीलत स्वरुप जो भी कर्म करें, उन कर्मों से कभी भी चपलता या दुष्टता न प्रकट हो, दुशष्ट कर्म हम कभी न करें। शुभ कर्म करते हुए हम अनेक लोगों का, अनेक प्राणियों का पालन करने वाले बनें प्राणियों के सहयोगी बनें, उनके कष्टों में उनके सहायक बनें।

शुभ से क्या अभिप्राय है ? शुभ का अभिप्राय है ऐसे कर्म, जिनसे लोगों का लाभ हो, लोगों का शुभ हो, ऐसे कर्म जो केवल अपने लिए ही शुभ न करें, अपितु अन्य लोगों का भी शुभ करें, अन्य लोगों का भी पालन करें, अन्य लोगों को भी उन्नत करें। अतः ऐसे कार्य, ऐसे कर्म, जिनके करने से अपने शुभ के साथ ही साथ अन्य लोगों का भी हित करने वाले हों, यह ही सत्य है, यह ही शुभ है। अतः हम उत्तम, परहितकारी कर्म करें। इस मन्त्र की यह पंकति यह ही आदेश दे रही है।

२. प्राणपान को अश्विना शब्द से स्मरण क्यों किया गया है ? प्राणपान को अश्विना शब्द से स्मरण क्यों किया गया है ? आओ इस पर भी कुछ विचार करें। अश्विना शब्द नाश्वान के लिए प्रयोग होता है। जहां तक प्राणों का सम्बन्ध है, यह स्थायी नहीं है, यह कभी भी तथा कहीं भी रुक सकते हैं। यह रहेंगे या नहीं इस संबंध में हमें कुछ भी नहीं पता। यह शरीर इन प्राणों के आधार पर क्रिया में रहता है या नहीं, क्रिया कर पाने में सक्षम रहता भी है या नहीं, यह भी हम नहीं जानते। हाँ ! इन प्राणों की क्रियाशीलता ही हमें चलाती है, इनकी क्रियाशीलता से ही हमें भूख लगती है, इनकी क्रियाशीलता ही हमें संसार में ऊँचा ले जाती है। इस लिए मन्त्र में कहा गया है कि हे मानव ! तू ने सदा सात्विक अन्न की ही इच्छा करती है, सात्विक अन्न की ही कामना करनी है, सात्विक अन्न की ही कामना करनी है, सात्विक अन्न प्राप्ति की ही अभिलाषा करनी है। यह सात्विक अन्न ही तेरा कल्याण करेगा।

पता : पाकेट-१, प्लाट-६१, रामप्रस्थ ग्रीन से.-७, वैशाली-२०१०१० गाजियाबाद उ.प्र.

तत्व-दर्शन अपने-अपने दुःख

- ओमप्रकाश बजाज

सब जानते हैं कि यह संसार दुःख-सुख का संगम है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन की भान्ति सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख मनुष्य के जीवन में आते रहते हैं। होनी को भी सब मानते हैं, भाग्य प्रारब्ध और मस्तक की रेखाओं में भी साधारणयतया विश्वास करते ही हैं, फिर भी दुःख में हम नितान्त परेशान, निराश, भयभीत और हताश हो जाते हैं। दुःख की घड़ियां बहुत लम्बी हो जाती है। हम अपना मानसिक संतुलन, अपना आपा तक खो बैठते हैं, कहा जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम भी सीता हरण तथा लक्ष्मण को घातक शक्ति से पीड़ित देखकर कातर और दुःखी हो गए थे फिर साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है।

दुःख साधारण जीवन का सत्य है, सुख-दुख के इस चक्र में हम दुःख से बच कर केवल सुख को ही प्राप्त कर लें। यह संभव नहीं है, दुख की परिभाषा हर एक की भिन्न हो सकती है और परिणाम भी, दुःख भी सब के अपने-अपने हैं, कोई संतान न होने से दुःखी है तो कोई अधिक संतान से त्रस्त हैं, कोई दो रोटी का जुगड़ा न कर पाने से दुःखी है तो लखपति की खिन्नता करोड़पति न बन पाने के कारण है।

बैठे बैठे मन में आया कि अपने आस पास ही एक नजर डाल लें, देखें तो सही कि लोग किस हाल में हैं, बीस घरों का हमारा पड़ोस है, मैं ने पहले से आरम्भ कर सभी परिवारों पर बारी बारी से दृष्टिपात किया -

पहले घर में श्री 'क' रहते हैं, उनका लड़का लुंज-पुंज, मांस का लोथड़ा सा पैदा हुआ था, न उठ-बैठ सकता है न देख-सुन सकता है, टट्टी-पेशाब, खिलाना-पिलाना नहलाना-धुलाना, सब मां-बाप को करवाना पड़ता है, चौदह वर्ष का हो गया है, इलाज, दवा-दारु सब करना ही पड़ता है। यह सब जानते हुए भी कि वह कभी स्वस्थ और सामान्य नहीं हो सकेगा, माँ-बाप और परिवार का अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

बगल वाले दूसरे घर में श्री 'ख' रहते हैं, पति-पित्न दोनों पोस्ट-ग्रेजुएट हैं, धनी-मानी परिवारों से हैं और दोनों बहुत अच्छी सर्विस में है, विवाहोपरांत बारह-तेरह वर्ष बीत जाने पर भी संतान सुख से वंचित हैं, आपरेशन झाड़-फूंक, मुल्ला-फकीर, मंदिर-मजार, सब करके देख लिया, मुराद पूरी नहीं हुई, जैसा कि हमारे समाज का आम चलन है, उनसे पहला सवाल हर मिलने वाला बच्चों के बारे में ही करता है, वह अपने इस दुख को भूलना भी चाहं तो भी लोग भूलने नहीं देते।

तीसरे घर में श्री 'ग' रहते हैं, रिटायमेंट में केवल दो वर्ष बाकी है, घर मं छः कन्याएँ हैं, बड़ी तीन विवाह योग्य हो चुकी है, सब से बड़ी के रिश्ते के लिए सुयोग्य वर की तलाश में भटकते भटकते थक चुके हैं, कोई संयोग नहीं बन पाया, सबसे छोटी कन्या अभी दूसरी कक्षा में पढ़ती है, रात दिन बेचारे एक ही धुन में व्यस्त रहते हैं।

चौथे घर मे श्री 'घ' हैं, इकलौता लड़का पढ़ाई से विमुख होकर बुरी संगत में पड़कर ड्रग्स, शराब, सब खाता पीता है, घर से गायब रहता है, ढूंढ ढूंढ कर लाते हैं, भाग भाग जाता है, मुहल्ले पड़ोस वाले, दोस्त-रिश्तेदार छींटाकशी करते हैं, बेचारे भलेमानुष किसी को मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहे।

अगले घर में श्री 'च' पत्नी कर्कशा है, घर में रात-दिन महाभारत मचा रहता है, मुहल्ले वाले चटखारे लेते हैं।

श्री 'छ' की पत्नी स्तन कैंसर से पीड़ित है, आपरेशन से एक स्तन निकाला जा चुका है, मगर रोग दूर नहीं हुआ। रात दिन अस्पताल, इलाज, दवा के चक्कर में रहते हैं, पैसा और पानी की तरह खर्च हो रहा है। मगर पत्नी धीरे-धीरे मौत के भयानक जबड़े की ओर बढ़ते जा रही है। कैसी बेबसी है कि हमारा अपना हमारे सामने हमारे हाथों से जा रहा है और हम कुछ कर भी सकते। इसी भांति एक एक करके मैंने पड़ोस के उन्नीस घरों में झांक डाला, हर एक अपने-अपने दुख में दुखी था। हर कोई अपन दुख को सब से बड़ा दुख मानता था। एक भी तो ऐसा नहीं मिला जिस पर दुख की काली गहरी छाया न हो, गुरु नानकदेव जी की वाणी स्मरम हो आई-नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया जिन नाम आधार। अपने छोटे-मोटे दुखों से मन जब दुखी हो तो अपने आसपास चहुं ओर दुखों के लहराते समुद्र को देख कर अपना निजी दुख बहुत छोटा, बहुत मामूली प्रतीत होने लगता है। यद्यपि दूसरों के दुख से सांत्वना पाना अच्छी बात नहीं है, फिर भी अधीर मन शान्त हो ही जाता है, प्रभु कृपा के प्रति कृतज्ञता की भावना भी उत्पन्न होती है कि हमारे दुख दूसरों के मुकाबले कुछ भी नहीं, एक नई आस्था, निष्ठा, समर्पण का भाव उस सर्वशक्तिमान के प्रति स्वयंमेव हृदय में जागृत हो उठते हैं।

पता - पो. बा. ५९५, जीपीओ, इन्दौर (म.प्र.) ४५२००१

विडम्बना

"लेखक"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

जिस समय उनकी प्रतिमा पर फूल माला चढ़ाई जा रही थी। उसी समय वे सभा में चाट बांट रहे थे। मंत्री जी ने मंच पर महान् लेखक के विषय में कहा - हमारा सौभाग्य है कि हमें शंभुनाथ जी जैसे महान् रचनाकार को उनके जीते जी उनके मूर्ति पर फूलमाला चढ़ाने का सौभाग्य मिल रहा है। ठीक इसी समय शंभुनाथ जी के कांपते हाथों से हिन्दी भवन में बैठ श्रोताओं, लेखकों, पाठकों की भीड़ में जो करतल ध्वनि से मंत्री जी की बात का स्वागत कर रहे थे, किसी अतिथि पर चाय गिर गई। अतिथि ने गुस्से में भद्दी गाली देते हुए शंभुनाथ को धक्का दिया और शंभुनाथ जी गिर पड़े। उनके सिर से खून बहने लगा। चाय की दुकान का मालिक शंभुनाथ को अच्छी तरह पहचानता था। वह फौरन होटल में लाया और अपने दूसरे कर्मचारी से चाय वितरण करने को कहा और स्वयं ऑटो में उन्हें अस्पताल ले गया।

ग्रामवासी शंभुनाथ को पता ही नहीं चला कि वे कैसे लिखने लगे ? और इतना अच्छा लिखने लगे कि उनकी कवितायें बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी। दसवीं के बाद गरीबी के कारण उन्होने पढ़ाई छोड़ दी थी। गांव में ही मजदूरी करने लगे थे। गांव में एक पुस्तकालय था। फुर्सत निकालकर वे जाते और एक-एक किताब पढ़ लेते। उन्हीं किताबों में दिये पते पर वे डाक से अपनी कवितायें भेजते रहते। शहर कभी किसी काम से जाते तो वहां के पुस्तकालय का पता करते और पढ़ते रहते पुस्तकें। उन्हें पता ही नहीं चला कि कैसे उनकी कवितायें राजधानी में धूम मचा रही थी। एक-दो प्रकाशक जरूर उनके गांव आये। उनसे कहा - "आप लिखिये। हम छापेंगे, आपकी रचनाओं को पुस्तक के रुप में और रुपया भी देंगे।" उन्होने पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करके प्रकाशक को भेजी। प्रकाशक ने उनके नाम पांच हजार का चेक भेजा। वे इसमें ही बहुत खुश थे। उन्होने अपनी पत्नी से कहा - "देखों अब तो नाराज नहीं होगी लिखने से। अब तो रुपये भी मिल रहे हैं। मैं इन रुपयों में से आधे तुम्हें दूंगा और आधे से कागज, कलम, लिफाफे, डाक टिकिट और पढ़ने के लिये कुछ किताबें खरीदूंगा।" पत्नी ने कहा - "ठीक है लिखो। लेकिन काम करना मत छोड़ना। इन पैसों से पूरा जीवन नहीं कटेगा।" वे खेतों में मजदूरी भी करते और लिखते भी जाते। इस बीच उन्हें कई बार पांच हजार रुपये दिये गये और बदले में उनसे पांडुलिपि ले ली जाती।

लिखते-लिखते उनकी उम्र ५५ वर्ष हो गई। एक बेटा था जो कालकवलित हो गया था। पत्नी थी और विवाह के काफी समय पश्चात् एक बिटियां हुई थी। जो अब विवाह के योग्य हो गई थी। इस साल गांव में सूखा पड़ा। खेती बर्बाद हो गई। उनके करने के लिए मजदूरी भी न थी गांव में।

वे बैठे सोच रहे थे कि क्या करें ? तभी गांव का एक लड़का जो शहर में नौकरी करता था। उसने शंभुनाथ के पैर पड़े। बचपन में उनका बेटा और यह लड़का मदन साथ में ही खेलते थे। मदन को आशीर्वाद देते हुए उन्होने कहा - "खुश रहो बेटा।"

मदन ने कहा - "चाचा आपको पता नहीं आप क्या चीज हैं ? शहर के स्कूलों के पाठ्यक्रम में आपकी कवितायें पढ़ाई जाती हैं। आपको याद है आप दो-तीन बार प्रदेश और देश की राजधानी गये थे सम्मान के लिए।"

"हाँ, बेटा याद तो है लेकिन उसका क्या ?"

"चाचा वे बहुत बड़े सम्मान थे। आप देश का गौरव हैं। आपके नाम से राजधानी में अकादमी खुली हैं। बहुत बड़ी साहित्यिक संस्था।"

"सुनिये, पत्नी ने कहा।"

"जब आपके नाम से सरकार ने इतना कुछ बनाया है तो आपको तो उसी संस्था में नौकरी मिल जायेगी। यहां

भूखे मरने से अच्छा है कि आप राजधानी जाइये और कहिये सरकार से कि हमारे नाम से संस्था बनाये हो। हमें नौकरी पर रखो कैसे मना कर देंगे ?"

जाने की इच्छा तो नहीं थी शंभुनाथ की। लेकिन कोई और चारा भी नहीं था। वे चल पड़े राजधानी की ओर। रिक्शे वाले से उन्होंने कहा - "भैया शंभुनाथ अकादमी का पता मालूम है।" रिक्शेवाला ने कहा - "जी मालूम है। चलना है क्या ?"

"कितना पैसा लोगे।"

"पचास रुपये।"

"ये तो बहुत ज्यादा है।"

"तो फिर सिटी बस से चले जाइये। वो सामने खड़ी है। कह देना शंभुनाथ अकादमी जाना है कोई भी पहुंचा देगा।"

वे सिटी बस में चढ़ गये। सिटी बस के कन्डक्टर ने पांच रुपये लेकर उन्हें अकादमी के बाहर छोड़ दिया। बाहर उनकी संगमरमर की प्रतिमा लगी थी। वे आश्चर्य से भर गये। वे अकादमी के अन्दर गये। बाहर चपरासी ने उनसे पूछा - "किससे मिलना है ?"

"साहब से"

"कौन साहब से ?"

"जो सबसे बड़ा हो।"

"इस तरह नहीं मिल सकते। अपाइन्मेंट ली।"

"नहीं ली।"

चपरासी ने उन्हें ऊपर से नीचे देखा। बड़ी दाढ़ी, बिखरे बाल, मैली सी धोती और एक-दो जगह फटा हुआ कुर्ता।

"जाओ पहले बाबू से मिलो।" शंभुनाथ जी बाबू के पास पहुंचे। उन्होंने बाबू से कहा - "मैं शंभुनाथ हूँ।"

शंभुनाथ को चुप देखकर अधिकारी ने कहा - आप बताइये। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ? कहो तो संस्कृति मंत्री से बात करके कोई राशि दिलवा दूँ।

नहीं, मुझे काम चाहिए।

मैं इसमें आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। अधिकारी ने कहा। चाय-नाश्ता आ चुका था।

लीजिये चाय-नाश्ता करिये। शंभुनाथ भूखे थे सुबहसे। वे नाश्ता करके चाय पीने लगे। अधिकारी ने कहा - आठ दिन आपके जन्म दिन पर अकादमी में बड़ा कार्यक्रम रखा गया है। मुझे बहुत काम है। आप जरुर आइये। आपको निमन्त्रण-पत्र भी भेजा जा चुका होगा। चलिये आपको बाहर तक छोड़ दूं। अधिकारी ने पूरी विनम्रता से कहा और बाहर तक छोड़ने आये। विभाग के कर्मचारियों को लगा कि साहब के गांव से कोई रिश्तेदार आये होंगे मदद मांगने।

थके-हारे शंभुनाथ जी सामने वाली चाय-नाश्ते की होटल पर बैठ गये। होटल का मालिक पढ़ने का शौकीन था। शंभुनाथ उसके प्रिय लेखक थे। शंभुनाथ को देखते ही पहचान गया। बिठाया। चाय पिलाई और कहा - हमारे अहोभाग्य जो आप इस गरीब की होटल पर पधारे।

शंभुनाथ ने उदास स्वर में कहा - मैं खुद गरीब हूँ। जब सुना कि मेरे नाम से संस्था बनाई है सरकार ने तो चला आया काम मांगने। लेकिन काम नहीं मिला।

आप मुझसे कहिये। आपको कितने रुपयों की जरुरत है ? होटल मालिक ने कहा।

भीख नहीं चाहिए। काम चाहिए। दोगे।

मेरी क्या औकात जो आपको काम दे सकूं।

तो फिर मैं चलता हूं।

जो तुम्हारे पास हो।

आप हमारी गद्दी संभालिए। मालिक बनकर बैठिये।

जीवन भर मजदूरी की है बेटा। काम कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। मेरे लायक काम हो तो बताओ।

मैं क्या बताऊँ ? आप जो करना चाहे। खुद ही चुन लीजिये। वेतन जो चाहे खुद ही तय कर लीजिये।

नहीं बेटा, जो सबको देते हो। मुझे देना। लेखक में किताबों में हूँ। अभी तो काम की तलाश में निकला मजदूर हूँ।

और होटल मालिक से कहकर शंभुनाथ ने वेटर की नौकरी स्वीकार कर ली। होटल में ही रात में उनके

सोने की व्यवस्था कर दी गई।

आज अकादमी में शंभुनाथ जन्म दिवस मनाया जा रहा था। होटल मालिक को आने वाले अतिथियों के चाय-नाश्ते का ठेका मिला था। होटल मालिक मन ही मन सोचकर दुखी हो रहा था कि जिसके नाम पर सरकार लाखों रुपये खर्च कर रही है। उसे ही अनदेखा कर रही है। जिसकी मूर्ति पर माला पहनाई जा रही है। जिसके सम्मान में बड़ी-बड़ी बातें होने वाली है। वही वेटर का काम करेगा अपने समारोह में। होटल मालिक ने कहा - आप अकादमी के कार्यक्रम में वेटर बनकर मत जाइये। शंभुनाथ नहीं माने। उन्होने कहा - मैं काम कर रहा हूँ। कोई भीख नहीं मांग रहा हूँ। चोरी नहीं कर रहा हूँ। काम करने में कैसी शर्म ? सरकार मेरे नाम से इतना बड़ा समारोह कर रही है इतना ही बहुत है मेरे लिए।

और शंभुनाथ ने चाय-नाश्ता बांटना शुरु कर दिया। जब मुख्य अतिथि शंभुनाथ जी के जीवन पर प्रकाश डाल रहे थे तब शंभुनाथ जी चाय और समोसे की प्लेट लिए अकादमी के हिन्दी भवन में दाखिल हुए। जब उनकी रचनाओं पर अध्यक्ष महोदय बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे। तब शंभुनाथ ने नाश्ता बांटना शुरु किया। और जब शंभुनाथ के नाम के आगे जी लगाकर उनकी मूर्ति पर पुष्पमाला चढ़ाई गई। उस समय शंभुनाथ के हाथ कांपे। जब शंभुनाथ की प्रशंसा से दर्शक दीर्घा में बैठे लोगों ने तालियां बजाई उसी समय उनके कांपते हाथों से किसी अतिथि पर चाय गिर गई और उन्हें भद्दी गाली देते हुए धक्का दे दिया गया। शंभुनाथ जी गिर पड़े।

शंभुनाथ जी नहीं गिरे थे। गिरा था सरकारी तंत्र, प्रशासनिक महकमा, और वे तमाम सम्मानित लोग जो अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथि बनकर आये थे। मंत्री जी ने पूछा - क्या शंभुनाथ जी नहीं आये ? क्या उनकी तबियत खराब है ? होटल मालिक ने चीखकर कहना चाहा कि आये थे लेकिन धक्का दे दिया गया उन्हें। वेटर का काम कर रहे हैं यहां। लेकिन होटल मालिक कह न सका। शंभुनाथ को लेकर उसे अस्पताल जाना था। उनके सिर से खून बह रहा था।

कार्यक्रम जारी था। मंत्री जी ने कहा - शंभुनाथ जी पहले साहित्यकार होंगे जिनके जीवित में ही उनकी फोटो पर माल्यार्पण किया जा रहा है। ये नियम के विरुद्ध है लेकिन ये व्यक्ति की नहीं व्यक्तित्व की पूजा है। उम्मीद करता हूँ। कि अगली बार वे स्वयं पधारकर हमें सेवा-सत्कार का मौंका देंगे। मैं शंभुनाथ जी के सम्मान में डाक-टिकिट जारी करने का प्रस्ताव भेजता हूँ संचार मंत्री को।

और दर्शक दीर्घा में फिर एक बार तालियों की गूंज सुनाई दी।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

बुरा नहीं लगता

- धैर्य और सन्तोष हो तो निर्धनता भी बुरी नहीं लगती, कपड़े साधारण हों पर साफ और धुले होंतो बुरे नहीं लगते, भोजन स्वादिष्ट न हों पर ताजा और गरम हो तो बुरा नहीं लगता, मनुष्य अच्छे स्वभाव का, सेवाभावी और मधुर भाषी हो तो कुरुप होने पर भी बुरा नहीं लगता, घर छोटा और साधारण हो पर साफ सुथरा और व्यवस्थित हो तो बुरा नहीं लगता और तन स्वस्थ तथा मन प्रसन्न हो तो कुछ भी बुरा नहीं लगता।

बुरा लगता है.

- कंजूस को दान देना बुरा लगता है, लोभी को मांगने वाला बुरा लगता है, चोरों को प्रकाश बुरा लगता है, मूर्ख को समझाने वाला उपदेशक बुरा लगता है, कर्जदार को तगादा बुरा लगता है, रुपवान को बुढ़ापा अच्छा नहीं लगता, व्यभिचारिणी स्त्री को पति अच्छा नहीं लगता, निर्धन को धनवान अच्छे नहीं लगते और जिसका मन शोक से व्याकुल हो उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

आर्यजगत के दानवीर भामाशाह श्रेष्ठी, अनेक समाजसेवी संस्थाओं के संस्थापक व पोषक, आर्यसमाज के गौरव एम.डी.एच. (महाशियाँ दी हट्टी) के चेयरमैन

को भारत सरकार

द्वारा

'पद्मभूषण सम्मान'

के लिए

चयनित किये

जाने पर

हार्दिक

शुभकामनाएँ

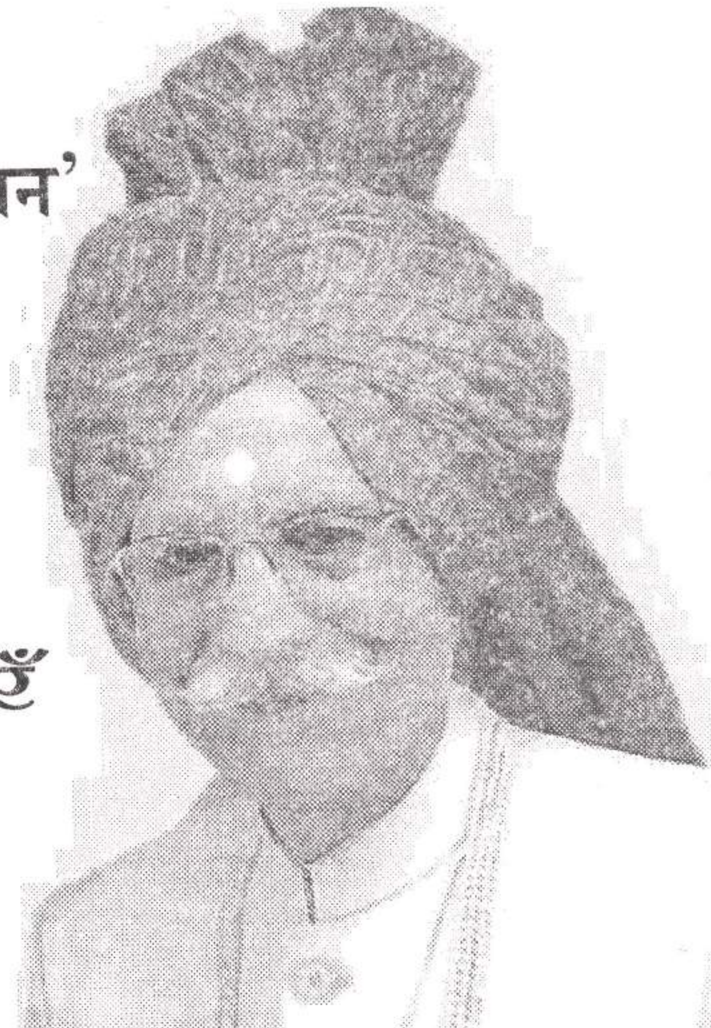

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी, अंतरंग सदस्य व छत्तीसगढ़ के संबद्ध समस्त आर्यसमाजें तथा "अग्निदूत" परिवार

प्रदूषण युग में हवन ही परम धर्म है, क्योंकि

हवन से देवताओं की पूजा, उनके गुणों में वृद्धि तथा परस्पर सत्संगति होती है,
हवन से पृथ्वी, जल, वायु, और अन्न आदि के विकार दूर होते हैं,
हवन से पेड़ पौधे लगाने तथा पशुपालन की प्रेरणा मिलती है,
हवन से प्रकृति में भेषज्य (औषध) तत्वों को भरा जाता है,
हवन से दुःख, दारिद्रय और शोक सन्ताप दूर होता है,
हवन से पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है,
हवन से मनुष्य स्वस्थ और प्रसन्न होता है,
हवन से मानव-धर्म का परिपालन होता है,
हवन से सात्विकता का विस्तार होता है,
हवन से हमारा योगक्षेम सिद्ध होता है,
हवन से प्राणवायु की वृद्धि होती है,
हवन से रोगों का निवारण होता है,
हवन से वर्षा की वृद्धि होती है,
हवन से बुद्धि, परिष्कृत होती है,
हवन श्रेष्ठतम कर्म है,
हवन कामधेनु है,
हवन विष्णु है,

यज्ञो हि परमो धर्मः

हवनं प्रति गमनं Back to Home हवन की ओर चलें
Heal The Environment Pertorm Agnihotra

जिज्ञासात्मक प्राण अपान शब्द पर शंका समाधान

- डॉ. वेदपाल

शंका - शरीर में श्वास लेते समय प्राणवायु आक्सीजन प्रवेश करती है अतः श्वास लेने का प्राण कहना ही युक्तिसंगत है। श्वास छोड़ते समय हानिकारक गैस कार्बन-डाईआक्साइड शरीर से बाहर निकलती है, इसलिए श्वास छोड़ने को अपान कहना युक्तिसंगत है। वैसे भी पान का अर्थ है, ग्रहण करना। अतः अपान शब्द पान शब्द का विलोम हुआ। इस कारण अपान का अर्थ हुआ छोड़ना। अतः श्वास छोड़ने को ही अपान तथा श्वास लेने को प्राण कहना तार्किक एवं सही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोक्त धर्म विषय में अथर्ववेद के मन्त्र १२/५/९ की व्याख्या करते हुये प्राण और अपान के सम्बन्ध में जो उल्लेख किया गया है, वह इससे उल्टा है। इसमें श्वास छोड़ने को प्राण और श्वास लेने को अपान कहा है। अथर्ववेद के मन्त्र ४/१३/२ एवं ३ की व्याख्या करते हुये श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी और पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने श्वास लेने को प्राण और छोड़ने को अपान ही लिखा है। ऋग्वेद के मन्त्र १०/१३७/२ एवं ३ में भी ऐसा ही लिखा है। पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय ने अपनी पुस्तक जीवात्मा में भी पृष्ठ-५६ पर श्वास लेने को प्राण और छोड़ने को अपान ही लिखा है।

अतः ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोक्त धर्म-विषय में उपरोक्त त्रुटि लेखन त्रुटि ही प्रतीत होती है। विद्वानों द्वारा गहन विचार-विमर्श उपरान्त एकमत होकर इस लेखन त्रुटि को ठीक कर देना चाहिए।

- *जगदीश प्रसाद शर्मा,* भोपाल

समाधान :- सर्वप्रथम अथर्व. १२.५.९ **'आयुश्च रुपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च'** - मन्त्रस्थ प्राण-अपान की महर्षि कृत व्याख्या को लें - **'शरीराद् बाह्यदेश यो वायुर्गच्छति स 'प्राणः'** **'बाह्यदेशाच्छरीरं प्रविशति स वायुरपानः'** (ऋ.भा.भू.) शर्मा जी का अभिमत है कि महर्षिकृत व्याख्या अन्य विद्वानों द्वारा अनुमोदित नहीं है। अतः लेखन-त्रुटि मानकर ठीक कर देना चाहिए के सन्दर्भ में निम्न बिन्दु विचारणीय है -

(१) शर्मा जी द्वारा अपान शब्द को पान शब्द का विलोम मानना उचित नहीं है। पान शब्द पा धातु से ल्युट प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ है, जबकि अपान शब्द अप उपसर्ग पूर्वक अन प्राणने (अदादि) धातु (पा नहीं) से अच् प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है - अपानयति मूत्रादिकम् (अप+आ+नी+ड वा)।

यदि दुर्जनातोष न्याय से अपान शब्द को पान शब्द से नञ् समास का अवशिष्ट अ पूर्वक मान भी लें तो नञ् (अ) केवल निषेधार्थक ही नहीं है। नञ् के छः अर्थ हैं-

तत्सादृश्यं तदन्यत्वं तदल्पत्वं विरोधिता।
अप्राशस्त्यमभावश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः॥

वामन शिवराम आप्टे (संस्कृत हिन्दी कोष, प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली) ने अपान शब्द के निम्न अर्थ किए हैं -

"श्वास बाहर निकालना, श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पांच पवनों में से एक जो नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है" - पृ. ६२

(२) प्राण शरीर में रहते हुए क्रिया भेद के आधार पर प्राण-अपान-व्यान-समान-उदान कहा जाता है। तद्यथा- **"प्राणोऽन्तः शरीरे रसमलधातूनां प्रेरणादिहेतुरेकः सन् क्रियाभेदादपादानादिसंज्ञां लभते"** - प्रशस्तपाद (द्रव्ये वायु प्रकरणम्) सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी, द्वि. सं.पृ. १२१.

उपर्युद्धत प्रशस्तपाद पर कन्दली भी द्रष्टव्य है - **"मूत्रपुरीषयोरधोनयनादपानः, रसस्य गर्भनाडीवितननाद् व्यानः, अन्नपानादेरुर्ध्वं नयनादुदानः, मुखनासिकाभ्यां निष्क्रमणात् प्राणः, आहारेषु पाकार्थमुदरस्य वह्नेः, समं सर्वत्र नयनात् समान इति न वास्तव्यमेतेषां पञ्चत्वमपितु कल्पितम्।"**

(३) वेद के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण का अथर्ववेद के १२वें काण्ड पर भाष्य उपलब्ध नहीं है, किन्तु अथर्व. १८.२.४६ 'प्राणो अपानो व्यानः.....' मन्त्र की सायण व्याख्या द्रष्टव्य है -

"मुख्य प्राणस्य तिस्रो वृत्तयः प्राणाद्याः। मुखनासिकाभ्यां बहिर्निः सरन् वायुः प्राणः। अन्तर्गच्छन् अपानः। मध्यस्थः सन् अशितपीतादिकं विविधम् आनयति कृत्स्नदेहं व्यापयतीति व्यानः।"

आचार्य सायन भी प्राण अपान का वही अर्थ करते हैं जो ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उपलब्ध है।

(४) अथर्व. ११.४.८ नमस्ते प्राण नमो अस्तत्वपानते - मंत्र का पं. जयदेव कृत अर्थ - हे (प्राण प्राणते नमः) प्राण! प्राण क्रिया करते, श्वास त्यागते हुए मुझे नमस्कार हैं (अपानते नमः अस्तु) श्वास ग्रहण करते हुए तुझे नमस्कार है। इसी प्रकार अथर्व. ११.४.१४ पर भी पं. जयदेव एवं सायण भाष्य भी द्रष्टव्य है।

(५) वैशेषिक दर्शन - ३.२.४ - 'प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुः खेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि' सूत्र पर पं. हरिप्रसाद वैदिक मुनिकृत प्राण-अपान की व्याख्या- मुखनासिकाभ्यां बहिर्निष्क्रमणशीलः ऊर्ध्वगतिकः शरीरान्तः सञ्चारी वायुः प्राणः। मूत्रपुरीषयोरधोनयनहेतु वाग्गतिकः शरीरान्तः सञ्चारी वायुरपानः।

उक्त सूत्र पर पं. तुलसीराम स्वामी- "मुख और नासिका से बाहर निकलने वाला, ऊपर को चलाने वाला, शरीरस्थ वायु प्राण कहाता है, मूत्र और विष्ठा को नीचे निकालने वाला शरीरस्थ वायु अपान कहाता है।"

(६) सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास पृ. १२६ पर जीव के गुणों के वर्णन में महर्षि दयानन्द वैशेषिक के पूर्व उद्धृत सूत्र ३.२.४ की व्याख्या (प्राण) प्राण वायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना करते हैं।

(७) वाचस्पत्यम् शब्द कोष में भी प्राणः वायुस्तस्य कर्म नासाग्रतो बहिर्गतिः (भाग-६, पृ. ४५०८) नासाग्र से बाहर जाने वाले वायु को प्राण कहा है।

उक्त सभी सन्दर्भों को दृष्टिगत रखकर यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द कृत अर्थ की सम्पुष्टि आचार्य सायण, महर्षि द्वारा मान्य वैशेषिक के भाष्यकार प्रशस्तपाद के कन्दली टीकाकार श्रीधर, पं. हरिप्रसाद वैदिक मुनि, संस्कृत के प्रसिद्ध कोष वाचस्पत्यम्, कोषकार आप्टे, पं. जयदेव तथा पं. तुलसीराम आदिकृत भाष्य से होती है। अतः परम्परा द्वारा स्वीकृत होने से महर्षि कृत अर्थ त्रुटिपूर्ण नहीं।

जीवन का वास्तविक उद्देश्य

आहारार्थं कर्म कुर्यादनिन्द्यं कुर्यादाहारं प्राणसन्धारणाय।
प्राणाः सन्धार्या तत्वजिज्ञासनाय तत्वं जिज्ञास्यं येन भूयो न जन्म॥

भावार्थ :- आखिर मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ? पुनरपि जननं पुनरपि मरणं-तो सभी सांसारिकों का होता ही है। कुछतो सोचिए भला ? क्या-आपने कभी विचार किया ? यह कटु सत्य है कि आहार की आवश्यकतार्थ मनुष्य को श्रेष्ठ जीविकोपार्जन के लिए दत्तचित्त एवं तत्पर रहना चाहिए। परन्तु अनिन्द्य कर्मों के द्वारा ही आजीविका को अपनावें यह ठीक नहीं। यदि पाप अन्याय छल-कपट से धन कमायेंगे तो वह कभी सुखदायी नहीं होगा उससे अशान्ति ही मिलेगी। और आहार भोजनादि की आवश्यकता मनुष्य के लिए क्यों है ? इसलिए न कि-प्राणों का धारण ही अन्न से किया जाता है। अन्न वै प्रजापतिः अन्न को विधाता कहा गया है यदि अन्न ही नहीं ग्रहण किया जाए तो सांसारिक प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अतएव उदरपोषणार्थ, प्राणसन्धारणार्थ मनुष्य आहार का सेवन अवश्य करें।

ऐतिहासिक शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी जी की हाजिर जवाबी विपत्तियों के विद्यालय में प्रशिक्षण

- कन्हैयालाल आर्य

पं. रामचन्द्र देहलवी जी का जीवन सदैव आर्थिक तंगी में रहा। एक बार तो उनके घर में एक समय ऐसा भी आया कि किसी थानेदार ने ईर्ष्यावश उनके घर में चोरी करवा दी और उन्हें सब्जी के पैसे जुटाने के लिए घर में रखी रद्दी बेचनी पड़ी, तब कहीं खाना बना। एक समय ऐसा भी आया जब वे दो समय भरपेट भोजन भी न कर पाते थे, परन्तु इन सब कठिनाइयों के होते हुए वह जब भी धर्म प्रचार के लिये जाते थे, तो किराया अपनी जेब से व्यय करते थे।

पं. जी अपने इस कष्टमय पारिवारिक जीवन से कभी भी दुःखी नहीं हुए। अपनी अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी वे धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहे।

दिल्ली के फव्वारा चौक पर सप्ताह में दो दिन मुसलमान व्याख्यान देते थे, दो दिन ईसाई व्याख्यान देते थे, उन व्याख्यानों में वे हिन्दू धर्म पर वे सिर पैर के घातक हमले करते थे। इस विचार ने उन्हें बेचैन कर दिया, उन्होंने अपने मन में विचार किया, अरे ! तेरे स्वाध्याय का क्या लाभ ? यह तो व्यर्थ जा रहा है। इस विचार से दुःखी होकर उन्होंने पुलिस को सूचना दी कि सप्ताह के शेष दो दिनों में मैं आर्य जगत पर होने वाले आक्षेपों का उत्तर दूंगा।

अगले ही दिन से उन्होने फव्वारे चौक देहली पर अपना पहला व्याख्यान दिया। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती गई और उन दोनों मुसलमान तथा ईसाईयों की महफिल उजड़ती गई। अन्ततः वे दोनों वहां से भाग निकले तथा पं. जी के व्याख्यानों में भीड़ इतनी बढ़ गई कि चांदनी चौक का आवागमन ठप्प होने लगा तभी पुलिस ने इनको व्याख्यानों के लिए पुरानी देहली रेल्वे स्टेशन के सामने गांधी ग्राउन्ड में स्थान दे दिया। इन व्याख्यानों का कार्यक्रम सप्ताह के ७ दिनों तक फव्वारे चौक व गांधी ग्राऊन्ड में पूरे १५ वर्ष (१९१० से १९२५तक) नियमित चलता रहा। विशेषता यह रही कि इन १५ वर्षों में व्याख्यानों के क्रम एक दिन भी अनुपस्थिति नहीं हुए।

हाजिर जवाबी :-

इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली, तुरन्त बुद्धि व अनुपम कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत में हो गया। भारत के सभी स्थानों से उनके प्रचार की मांग उठने लगी और उन्होंने अपने शास्त्रार्थों से विरोधियों को पूरी तरह पराजित किया। उनके शास्त्रार्थों एवं धर्म चर्चाओं में हाजिर जवाबी एवं व्यंग्य विनोद की भरमार रहती थी।

बाड़ा हिन्दू राव में पं. जी का पहला शास्त्रार्थ मौलाना से हुआ, वह बहुत ही सफल रहा। उनके कुरआन के गुरु हाफिज साहब ने छिप कर सुना था तब उनकी बांछे खिल गई थी। वे कुरान की आयतों को इतना शुद्ध सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हुए थे। इस सफलता से उनका आत्म विश्वास दृढ़ से दृढ़तर हो गया। जनता को धर्म के क्षेत्र में पं. रामचन्द्र देहलवी जी के रुप में भीम मिल गया, जिसके पास अकाट्य तर्कों की गदा थी, जिससे वे प्रतिद्वन्द्वी पहलवान को पछाड़ने में सिद्धहस्त थे। न जाने कितने अखाड़े जमे जिनमें पं. जी ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को चारों खाने चित्त किया। इन अखाड़ों में उनकी हाजिर जवाबी के कुछ दृश्य देखिये :-

१. एक शास्त्रार्थ में मौलाना सनाउल्ला ने कहा पंण्डित जी! जहां आपके 'राम' समाप्त होते हैं। ('म' पर) वहीं हमारे मुहम्मद साहब शुरु होते हैं। अतः अब आपको राम का नाम छोड़कर मुहम्मद का जप करना चाहिये। देहलवी जी बोले, शाबाश मौलाना साहब ! बहुत सुन्दर ! सुन्दर मौलाना साहब ! बीच में क्यों रुक गये। आगे भी कहो ! मौलाना बोले, आगे क्या है ? यह आप ही कह दीजिये, पण्डित जी बोले, "मौलाना साहब ! जहां आपके मुहम्मद साहब समाप्त होते हैं ('द' पर) वहां से दयानन्द शुरु हो जाते हैं। इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़कर दयानन्द के गीत गाओ", मौलाना ने पूछा, दयानन्द समाप्त कहाँ होते

हैं ? पण्डित जी बोले, "दयानन्द तो जहां से प्रारम्भ होता है, वहां ही समाप्त होता है", अर्थात् 'द' से प्रारम्भ होकर 'द' पर ही समाप्त होता है।

एक बार की बात है कि मौलाना सनाउल्ला के मन में शरारत आ गई। उन्होंने पण्डित जी से कहा, "पण्डित जी ! मैं आपके गुरु स्वामी दयानन्द की मुख्य पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पर लघुशंका करना चाहता हूँ।" पण्डित जी मौलाना की शरारत को भाँप गये। उसे उसी की भाषा में उत्तर देना आवश्यक था। पण्डित जी ने तुरन्त उत्तर दिया, "मौलाना ! तुम्हें अपने मुंह से लघुशंका करने की बीमारी कब से हो गई? इसे थोड़ी देर मुंह में रखिये "। लघुशंका के दो अर्थ है छोटी शंका करना तथा मूत्र करना। मौलाना का उद्देश्य ऋषि दयानन्द जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पर मूत्र करना था। उसकी इसकी शरारत पूर्ण उक्ति का उसी भाषा में उत्तर देते हुए कहा - "मौलाना ! अभी मुंह में रखिये", अर्थात् कुछ देर पश्चात् शंका करना। इससे मौलाना निरुत्तर हो गया।

पण्डित जी आर्यसमाज फिरोजपुर पंजाब के वार्षिकोत्सव में भाग लेने गये, वहां भी शास्त्रार्थ का अखाड़ा जमा। शास्त्रार्थ को सुनने वालों में एक पठान नवयुवती भी थी जो अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। पण्डित जी कुरान शरीफ की आयतें ऐसी शुद्ध ढंग से पढ़ते थे कि बड़े बड़े हाफिज व मौलवी भी चकित रह जाते थे। यह पठान लड़की भी पण्डित जी की वाणी से अत्यन्त प्रभावित हुई। उसे पण्डित जी का आयतें पढ़ना बहुत अच्छा लगा और उसने वहां के मन्त्री को दस रुपये का नोट दिया और कहा, "साडे मौलवी पण्डित न ए दस रुपये मेरे वल्लों देई"। पण्डित जी हँसते-हँसते यह घटना सुनाने के पश्चात् कहा करते थे, "मुझे अरबी पढ़ने की फीस भी मुस्लिम मतावलम्बी ने ही दी। मैंने अपनी जेब से कुछ व्यय नहीं किया।" स्मरण रहे पण्डि त जी ने जिस हाफिज से कुरान शरीफ पढ़ा था, उसको उसने १०ं रु. शुल्क ही दिया था। इस प्रकार कुरान पढ़ने का शुल्क एक मुस्लिम महिला के द्वारा दिये जाने पर पण्डित जी ने यह बात कही।

एक बार की बात है कि आयत पढ़ने में कहीं जबर व जरे (बड़ा ऊ ऊपर छोटी इ नीचे) के ऊपर विवाद खड़ा हो गया। पण्डित जी ने विवाद की समाप्ति के लिए कुरान शरीफ की जो प्रति उनके पास थी खोलकर दिखा दी। मौलाना ने अपनी भूल स्वीकार की।

बात दीनानगर की है। एक बार मौलवी अल्लाह दिया पण्डित जी के साथ ईश्वर की आराधना पर चर्चा कर रहे थे। पण्डित जी ने पूछा- "मौलवी जी बताईये कि जब आप नमाज पढ़ते समय खड़े होते हैं, जब आप रुकू (घुटनों पर हाथ रखकर झुकते हैं) करते है और जब सिजदा (नमस्कार) करते हैं तो अपनी पेशानी (माथे) को भूमि पर रखे देते हैं, तो इस सबसे आपका क्या अर्थ है ?" मौलवी जी ने कहा, "पण्डित जी, हम खुदा का सम्मान करते हैं", पण्डित जी ने पूछा, "क्या इस सम्मान से खुदा पर कोई प्रभाव पड़ता है ?" मौलवी साहब ने उत्तर दिया, खुदा इस सम्मान से प्रसन्न होता है।" पण्डित जी ने कहा, "आप सम्मान प्रकट करके खुदा में परिवर्तन उत्पन्न करना चाहते हैं। पहले वह प्रसन्न नहीं होता, बाद में प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार उस समय प्रत्येक क्षण कोई न कोई नमाज पढ़ ही रहा होता है, तो आप का खुदा प्रत्येक क्षण परिवर्तित हो रहा होता है। क्या ऐसा खुदा खुदा हो सकता है ?" मौलवी जी थोड़े होश में आये और कहने लगे, "पण्डित जी, खुदा पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता, इसका प्रभाव हम पर ही होता है।" पण्डित जी ने कहा, आप सम्भल गये नहीं तो आपका खुदा खुदा न रह कर कुछ और ही होता, प्रत्येक क्षण परिवर्तित हो जाने के कारण जाने क्या बन जाता। स्मरण रखिये खुदा पर सम्मान दिखलाने का कोई प्रभाव नहीं होता।

हमारे पौराणिक भाई कई बार ऐसा कहते हैं कि हम परमात्मा की सेवा (पूजा) करते हैं। अब विचारते हैं कि भगवान की सेवा के लिए क्या चाहिये। सेवा के लिए चार वस्तुएँ चाहिये। १.- सेवक (सेवा करने वाला) २. सेव्य (जिसकी सेवा की जाये) ३. सेवा (जो क्रिया सेवा के लिए करता है) ४. सेवा का सामान। ये चार वस्तुएँ होनी आवश्यक है।

शेष अगले अंक में

फांसी की बेला पर साथियों को शहीद भगतसिंह का अंतिम पत्र

मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा

- ऋषि आर्य

भगतसिंह द्वारा फांसी की बेला पर साथी क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी को लिखे लम्बे पत्र की कड़ी में, अमर शहीद की लेखनी से उसी बेला में लिखा यह संक्षिप्त पत्र भविष्य की पीढ़ियों को भगतसिंह के जीवन और क्रान्ति-कर्म का अनुकरणीय साक्षात्कार कराता है।

साथियों,

जिन्दा रहने की ख्वाहिश कुदरती तौर पर मुझमें भी होनी चाहिए। मैं उसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा जिन्दा रहना मशरुत सशर्त है, मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जिन्दा रहना नहीं चाहता। मेरा नाम हिन्दुस्तानी इंकलाबी पार्टी का मरकजी निशान बन चुका है और इन्कलाब पसन्द पार्टी के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है, इतना ऊंचा कि जिन्दा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियां लोगों के सामने नहीं है। अगर मैं फांसी से बच गया तो वो जाहिर हो जायेंगी और इन्कलाब का निशान मद्धिम पड़ा जायेगा या शायद मिट ही जाय, लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते फांसी पाने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए बलिदान होने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि इन्कलाब को रोकना साम्राज्यवाद की तमाम कोशिशों के भी बस की बात न रहेगी। हाँ, एक विचार आज भी चुटकी लेता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ हिस्सा भी मैं पूरा नहीं कर पाया। अगर जिन्दा रह सकता तो शायद इनको पूरा करने का मौका मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फांसी से बच रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा ? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी इम्तेहां, अन्तिम परीक्षा का इन्तजार है। आरजू है कि यह और करीब हो जाये।

- भगतसिंह

—: प्रवेश सूचना :—

गुरुकुल विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर

: सत्र : २०१९-२०

(संबद्ध - गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

(कक्षा : ६वीं से ११वीं और बी.ए. प्रथम वर्ष)

प्रवेश परीक्षा : ७ अप्रैल २०१९ प्रातः १० बजे

: सत्र : २०१९-२०

आवश्यक दस्तावेज : आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, आयु प्रमाण पत्र, स्वास्थ्य प्रमाण पत्र

परीक्षा उपरान्त : गत परीक्षा का प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, पासपोर्ट आकार के चार छाया चित्र

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : ०१८१-२७८२२५२-४९ (कार्यालय), आचार्य : ९८०३०४३२७१,

अधिष्ठाता : ०९८८८७-६४३११, व्हाट्सएप : ०९९८८१६३२३९

वैचारिक नारी के सच्चे आभूषण

- कुसुमाङ्गी आर्या

प्रत्येक नारी को पढ़ा-लिखा सुशिक्षित परम आवश्यक है। पढ़ने लिखने के बाद महिला को मूर्खता के काम नहीं करने चाहिये। सोने चांदी के आभूषण लादकर कोई नारी समाज में सम्मान प्राप्त करने योग्य नहीं होती, जब तक उसमें निम्नलिखित गुण नहीं है :-

(१) **लज्जा** - यह नारी का सबसे पहला गुण है। जो महिला लज्जीहीन है, वह नजरों से गिर जाती है। कोई स्त्री बेशक काली है परन्तु लज्जा की सीमा में रहती है, तो सबसे अच्छी लगती है।

(२) **मीठी वाणी** - यह दूसरा गुण है, जो नारी नम्रतापूर्वक मीठा बोलती है, उसकी सब प्रशंसा करते हैं। जो महिला कर्कश (कड़वे) शब्दों का प्रयोग करती है, वह किसी को अच्छी नहीं लगती, उससे कोई बात करना पसन्द नहीं करता।

(३) **आचरण** - कोई नारी लज्जावती है और वाणी भी मधुर है परन्तु आचरण शुद्ध नहीं। जैसे मीठा तो बोलती है, परन्तु असत्य (झूठ) बोलती है या हेराफेरी करती है तब उसका विश्वास कोई नहीं करता, अपितु निन्दा करते हैं। अतः तीसरा गुण सत्य आचरण है।

(४) **कुशल गृहिणी** - नारी में सब गुण होते हुये भी यदि गृहकार्य में दक्ष नहीं है तो अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। जैसे भोजन बनाने की कला में प्रवीण नहीं तो परिवार में सम्मान नहीं होता। ऐसे ही घर में सामान को ठीक ढंग से उचित स्थान पर रखना और सफाई का ध्यान रखना गृहिणी की विशेषता है। सिलाई-कढ़ाई भी गृहकार्य में आवश्यक है।

(५) **व्यावहारिक ज्ञान** - किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, इसमें भी नारी को कुश होना चाहिए, जैसे अपनी गुरुजनों (बड़ों) वा सम्बन्धियों की सेवा-सत्कार में कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

नारी के यह गुम ही उसके सच्चे आभूषण है। जो नारी अपने पिता और पति के कुल की शोभा बनाकर रखना चाहती है इन गुणों को धारण करना चाहिये।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

पता - गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

आर्यसमाज फले-फूले

दयानन्द ऋषि की यश गाथा दिग्दिगंत में छाए।
भारतीयता पूत-भावना, जन-जन हृदय में समाए।
निर्बल, निर्धन, शोषित, कंचिततक पहुंचे सुख किरणें।
प्रणव मंत्र गूंजे, 'विनम्र', शुभ-ओ३म्, ध्वजा फहराए।

o-o

दयानन्द स्वामी की शिक्षा, कट्टरता दें छोड़।
हम 'सत्यार्थ प्रकाश' में खो जावें, तम की कारा होड़।
सुख-दुःख, मुक्ति-युक्ति के साधन स्वयं जुटाने होंगे।
ऊँ भुर्भूवः स्वः सुबुद्धि दे, जीवन पथ दे मोड़।

o-o

वेदों का अध्ययन अनुसरण आर्यों का सद्धर्म है।
संस्कार विधि को अपनाना आर्योचित शुभ कर्म है।
ढोंग प्रदर्शन त्यागे मन से, दयानन्द ऋषि को माने।
आर्यसमाज फले-फूले, पावनतम वैदिक धर्म है।

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-२२६०२२

धर्मवीर पंडित लेखराम

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीवनियों का अवलोकन करने से भलीभांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है वह सब पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यक्तया उपलब्ध होते हैं।

वैदिक धर्म के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर धर्म प्रचार, लेखन, शास्त्रार्थ, शुद्धि तथा विविध कार्यों में जीवन समर्पित कर देने वले पं. लेखराम जैसे धर्मवीर, आर्य जाति के इतिहास में बहुत कम देखने में आते हैं। इनका जन्म १९१५ विक्रमी में जेहलम जिले के एक ग्राम सय्यदपुर में महता तारासिंह नामक ब्राह्मण के यहां हुआ। बाल्यकाल में उनका अध्ययन फारसी तथा उर्दू के माध्यम से हुआ। यही भाषाएँ उन दिनों पंजाब में पढ़ाई जाती थीं। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। इन्हीं दिनों इनका झुकाव धर्म एवं अध्यात्म की ओर हुआ। वे गीता का नियमित पाठ करते तथा अद्वैतवाद की दार्शनिक विचारधारा का लगातार चिन्तन करते। उन्हें पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विचारक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का भी अवसर मिला। फलतः उनके विचारों में परिवर्तन आया। अब वे ऋषि दयानन्द की विचारधारा से परिचित हुए। १९३७ वि. में पेशावर में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। अब उन्हें वैदिक धर्म के विषय में अधिक जानने की इच्छा हुई एक मास का अवकाश लेकर वे ऋषि दयानन्द से भेंट करने के लिए अजमेर जा पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी के चरणों में सिर नवाया और अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की। जब स्वामी जी महाराज ने इस युवक के सभी प्रश्नों का सम्मानजनक उत्तर दे दिया, तब पं. लेखराम संतुष्ट मन से स्वस्थान पर लौट आए। स्वामीजी ने इस समय उनसे यह भी प्रतिज्ञा कराई कि पच्चीस वर्ष से पूर्व वे हरगिज विवाह नहीं करेंगे। पं. लेखराम ने गुरुवर के इस आदेश को निभाया। पं. लेखराम अब सर्वात्मना धर्मप्रचार में जुट गए। उन्होंने धर्मोपदेश नामक एक उर्दू मासिक निकाला। उसमें उच्च कोटि के लेख लिखने लगे। उन दिनों पंजाब में मुसलमानों के एक नये फिर्के अहमदिया सम्प्रदाय (कादियानी) का जोर था। इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को पैगम्बर बताने लगे थे। उनके अनुयायियों की संख्या भी बढ़ रही थी। यद्यपि पं. लेखराम पुलिस सेवा में रहते हुए भी धर्मप्रचार के लिए पर्याप्त समय देते थे, किन्तु १९४० वि. में स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् उन्होंने अनुभव किया कि अब सरकारी नौकरी और धर्मप्रचार दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। अतः उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और धर्मोपदेश को ही अपने जीवन का एकमेव लक्ष्य बनाया।

पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को आलोचना का लक्ष्य बनाया। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्डन में उन्होने अनेक ग्रन्थ निकाले। **'तकजीब बुराहीन अहमदिया'** और 'नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। मुसलमानों ने भी कादियानियों की मिथ्या बातों तथा कपोल कल्पनाओं को समझना आरम्भ किया।

जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विधिवत गठन हुआ तो पं.लेखराम उसके उपदेशक बन गए। सभी की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रचारार्थ जाने लगे। उनकी प्रवृत्तियां बहुआयामी थीं। उन्होंने 'आर्यगजट' का सम्पादन किया। विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, हिन्दू धर्म को छोड़कर

या इस्लाम ग्रहण करने वालों को स्वधर्म में रहने के लिए मनाया। जहां जहां से उन्हें प्रचारार्थ बुलाया गया, वहां वहां जाकर उन्होने लोगों को वैदिक धर्म के तत्वों को समझाया।

इनके अतिरिक्त पं. लेखराम सुयोग्य लेखक भी थे। उन्होने भारतीय इतिहास, ईसाई तथा इस्लाम धर्म के मूल तत्वों तथा मान्यताओं का विशद अध्ययन किया था, सैमेटिक मतों के मान्य ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया था। इन मतों के वे अधिकृत विद्वान् समझे जाते थे। इसी बीच आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर, ऋषि दयानन्द का विस्तृत एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखवाने का निश्चय किया। इस कार्य को आरम्भ करने के पूर्व यह आवश्यक कि ऋषि जीवन विषयक सभी तथ्यों एवं जानकारियों को एकत्र किया जाता। यह गुरुवर कार्य पं. लेखराम के ही सुपुर्द किया गया। सभा के आदेश को शिरोधार्य कर पं. लेखराम जी स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संकलन करने के लिए देश के विभिन्न भागों में गए। प्रत्यक्षदर्शियों से मिलकर, आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने के अतिरिक्त उन्होने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि पत्रों में प्रकाशित ऋषि दयानन्द सम्बन्धी संदर्भ सूचनाओं तथा लेखों को भी एकत्र किया।

इस बहुत संग्रह कार्य को पूरा करने के पश्चात् वे लाहौर आए और जीवनी लेखन का कार्य आरम्भ किया। यह दुर्भाग्य ही था कि असमय में बलिदान मार्ग को पथिक बन जाने के कारण, पं लेखराम की लौह लेखनी से, आचार्यप्रवर का वह विशद जीवनचरित नहीं लिखा जा सका। कालान्तर में पंजाब सभा के प्रधान लाला मुन्शीराम के आदेश से पं. आत्माराम अमृतसरी ने पं. लेखराम द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर ही इस वृहद् ग्रन्थ को उर्दू में लिखकर पूरा किया।

१९५० विक्रमी में जब उनकी आयु ३५ वर्ष की थी, उन्होने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया और कुमारी लक्ष्मी को अपनी सहधर्मिणी बनाया। उनके एक पुत्र हुआ जो अधिक आयु नहीं पा सका। पं. लेखराम की यह विशेषता थी कि जहां और जिस समय उनकी परिस्थिति की आवश्यकता महसूस की जाती वे अन्य सभी कामों को छोड़कर वहां पहुंच जाते। ऐसा करते समय उन्हें न तो निजी सुविधाओं की ही चिन्ता रहती, न वे यात्रा की कठिनाइयों का ही ख्याल करते। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर के प्रशासक महाराजा प्रतापसिंह, स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा को अपने यहां बुलाकर मांस भक्षण के समर्थन में उनसे कोई व्यवस्था लिखवाना चाहते हैं, तब पं. लेखराम अविलम्ब जोधपुर पहुंचे। उन्होने पं. भीमसेन को स्पष्ट कह दिया कि यदि उसने लोभ या दबाव में आकर मांस के समर्थन में कोई व्यवस्था दे दी, दो उसे आर्यसमाज की वैदी पर खड़े होने से भी वंचित कर दिया जाएगा और उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी।

बूंदी में जब आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द का पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ होने लगा, तब उनकी सहायता के लिए पण्डितजी को भेजा गया। इस अवसर पर उन्होने भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर कस्बे में, मुहम्मदी मत की आलोचना में एक तर्कपूर्ण व्याख्यान किया। साधु केशवानन्द नामक एक पौराणिक साधु से शास्त्रार्थ करने के लिए वे हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में गए और वहां पर आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वधर्म को त्यागकर, किसी अन्य मत की दीक्षा लेने के लिए तत्पर लोगों को बचाने के लिए पं. लेखराम सदा सजग रहते थे। जब उन्हें पता चला कि पटियाला रियासत के एक गांव पायल में कोई हिन्दू अपना मत त्यागकर अन्य मत में दीक्षित हो रहा है, तो वे बिना इस बात का विचार किये कि अमुक रेलगाड़ी उस स्टेशन (बाबा पायल) पर ठहरती भी है या नहीं, द्रुतगति रेल में सवार हो गए। जब गाड़ी पायल स्टेशन होकर गुजरने लगी तो लेखराम ने अपना बिस्तर चलती गाड़ी से बाहर फेंका और स्वयं भी कूद गए। उन्हें इस बात की थोड़ी भी चिन्ता नहीं हुई कि उनके शरीर को क्षति पहुंची है। वे तुरन्त स्वधर्म त्याग के लिए तत्पल उस व्यक्ति के निकट पहुंच गए और उससे पूछने लगे कि उसने क्या सोचकर धर्म परिवर्तन का निश्चय किया है? जब उक्त व्यक्ति को पता चला कि पं. लेखराम तो अपने शरीर पर चोटों को झेलकर केवल उसे बचाने के लिए ही

आए हैं, तब उसने परमत-प्रवेश का अपना संकल्प त्याग दिया। पं. लेखराम जितने उत्तम वक्ता उपदेशक और शास्त्रार्थकर्त्ता थे उसी भांति उच्च कोटि के लेखक भी थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या ३३ है, जो कुलियात आर्य मुसाफिर नामक वृहद ग्रन्थ में संग्रहित है। इनके एकाधिक अनुवाद हिन्दी में भी हुए हैं। जब १८९७ के वर्ष में पं. लेखराम लाहौर में अपने निवास में रहकर दयानन्द जीवन लेखन का कार्य कर रहे थे, उनके प्राणहरण की चेष्टा सफल हुई। जब वे दिन भर के लेखन कार्य से थककर अंगड़ाई लेते हुए उठे, तो एक काले गठीले तथा हिंसक प्रवृति के पुरुष ने उनकी छाती तथा पेट में छुरे से घातक प्रहार किये। इस आकस्मिक प्रहार से पं. लेखराम के शरीर से खून की धाराएं बह निकली, अंतड़ियां भी बाहर आ गई। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया। जीवन के इन अंतिम क्षणों में भी ईश्वर-विश्वासी लेखराम परमपिता का निरन्तर स्मरण करते रहे। उस समय आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता लाला मुन्शीराम भी उनकी मृत्यु शैया के निकट उपस्थित थे। इस समय अमर हुतात्मा श्री लेखराम ने आर्यजाति को अपना अन्तिम संदेश देते हुए कहा कि आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) तथा तकरीर (व्याख्यान) का काम कभी बंद नहीं होना चाहिए। मर्म स्थलों पर लगे प्रहारों ने उनके जीवन की आशा को समाप्त कर दिया। ६ मार्च १८९७ की रात्रि को इस अमर धर्मवीर का धर्म की वेदी पर बलिदान हो गया। धर्म और सत्य के लिए स्वयं को होम देने वाले पं. लेखराम जैसे सर्वस्य स्वामी पुरुष ही मानवता के प्रकाश स्तम्भ है।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत् २०७५–२०७६ तदनुसार सन् २०१९ ई.

क्र.	पर्व नाम		चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१.	लोहड़ी		पौष शुक्ल ७	२०७५	१३-०१-२०१९	रविवार
२.	मकर संक्राति		पौष शुक्ल ८	२०७५	१४-०१-२०१९	सोमवार
३.	गणतंत्र दिवस		माघ कृष्ण ६	२०७५	२६-०१-२०१९	शनिवार
४.	बसन्त पंचमी		माघ शुक्ल ५	२०७५	१०-०२-२०१९	रविवार
५.	सीताष्टमी		फाल्गुन कृष्ण ८	२०७५	१९-०२-२०१९	मंगलवार
६.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव		फाल्गुन कृ.-१०	२०७५	०१-०३-२०१९	शुक्रवार
७.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)		फाल्गुन कृ. -१३	२०७५	०४-०३-२०१९	सोम वार
८.	लेखराम बलिदान दिवस		फाल्गुन शु.-३	२०७५	०९-०३-२०१९	गुरुवार
९.	नवसंस्येष्टि (होली) मिलन पर्व		फाल्गुन पूर्णिमा	२०७५	२०-०३-२०१९	बुधवार
१०.	नवसम्वतसराम्भः (आर्यसमाज स्थापना दिवस)		चैत्र शुक्ल - १	२०७६	०६-०४-२०१९	शनिवार
११.	रामनवमी		चैत्र शुक्ल- ९	२०७६	१३-०४-२०१९	शनिवार
१२.	बैशाखी		बैसाख शुक्ल -१०	२०७६	१४-०४-२०१९	रविवार
१३.	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्म दिवस		बैसाख कृष्ण -७	२०७६	२६-०४-२०१९	शुक्रवार
१४.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)		श्रावण शु.- ३	२०७६	०३-०८-२०१९	शनिवार
१५.	रक्षा बंधन (श्रावणी उपाकर्म)	वेद प्रचार सप्ताह	श्रावण पूर्णिमा	२०७६	१५-०८-२०१९	गुरुवार
१६.	स्वतंत्रता दिवस		श्रावण पूर्णिमा	२०७६	१५-०८-२०१९	गुरुवार
१७.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		भाद्रपद कृ. ८	२०७६	२४-०८-२०१९	शनिवार
१८.	दशहरा (विजयादशमी)		आश्विन शु. १०	२०७६	०८-१०-२०१९	मंगलवार
१९.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस		आश्विन शु. १२	२०७६	१०-१०-२०१९	गुरुवार
२०.	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)		कार्तिक अमावस्या	२०७६	२७-१०-२०१९	रविवार
२१.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस		पौष कृष्ण १२	२०७६	२३-१२-२०१९	सोमवार

विशेष टिप्पणी : १. आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साहवर्धक मनाएँ। २. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

आरोग्य कुष्ठ रोगियों के लिए होमियोपैथी चिकित्सा एक वरदान

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

कोढ़ या कुष्ठ रोग (लिप्रोसी) या हन्सेन रोग एक जीर्ण रोगे हैं। जो माइकोबैक्टिरियम लेप्राई नामक जीवाणु (बैक्टिरिया) के कारण होता है। यह मुख्य रुप से मानव त्वचा, ऊपरी श्वसन पथ की श्लेष्मिका, परिधीय तंत्रिकाओं, आंखों और शरीर के कुछ अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करता है। यह न तो वंशागत है और न ही दैवीय प्रकोप बल्कि यह एक रोगाणु से होता है। सामान्यतः त्वचा पर पाये जाने वाले पीछे या ताम्र रंग के धब्बे जो सुन्न हों या रंग तथा गठन में परिवर्तन दिखाई दे, तो यह कुष्ठ रोग के लक्षण हो सकते हैं। यह रोग छूत से नहीं फैलता। कुष्ठ की गणना संसार के प्राचीनतम ज्ञात रोगों में की जाती है। इसका उल्लेख चरक और सुश्रुत ने अपने ग्रंथों में किया है। उत्तर साइबेरिया का छोड़कर संसार का कोई भाग ऐसा नहीं था जहां यह रोग न रहा हो। किन्तु अब ठंडे जलवायु वाले प्रायः सभी देशों में इस रोग का उन्मूलन किया जा चुका है। अब यह अधिकांशतः कर्क रेखा से लगे गर्म देशं के उत्तरी और दक्षिणी पट्टी में ही सीमित है और उत्तरी भाग की अपेक्षा दक्षिणी भग में अधिक है। भारत, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका में यह रोग अधिक व्यापक है। भारत में यह रोग उत्तर की अपेक्षा दक्षिण में अधिक है। उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु और दक्षिण महाराष्ट्र में यह क्षेत्रीय रोग सरीखा है। उत्तर भारत में यह हिमालय की तराई में ही अधिक देखने में आता है।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कुष्ठरोग

यह रोग संक्रामक है। यह रोग सामान्यतः गंदगी में रहने वाले और समुचित भोजन के अभाव में ग्रस्त लोगों में ही होता है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि स्वच्छ और समृद्धिपूर्ण जीवन बितानेवाले वकील, व्यापारी, अध्यापक आदि इस रोग से सर्वथा मुक्त हैं। वे लोग भी इस रोग से ग्रसित पाए जाते हैं।

इस रोग का कारण माइक्रो बैक्टिरियम लेप्रे नामक जीवाणु (बैक्टीरिया) का त्वचा में प्रवेश समझा जाता है। इस प्रकार - कुष्ठ सामान्यतः तीन प्रकार का ही होता है।

तंत्रिका कुष्ठ :- इसमें शरीर के एक अथवा अनेक अवयवों की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। सुई चुभोने पर भी मनुष्य किसी प्रकार का कोई कष्ट अनुभव नहीं करता।

ग्रंथि कुष्ठ :- इसमें शरीर के किसी भी भाग में त्वचा से भिन्न रंग के धब्बे या चकते पड़ जाते हैं अथवा शरीर में गाँठे निकल आती है।

मिश्रित कुष्ठ :- इसमें शरीर के अवयवों की संवेदनशीलता समाप्त होने के साथ-साथ त्वचा में चकते भी पड़ते हैं और गांठे में निकलती है।

इस रोग का संक्रमण किसी रोगी पर कब और किस प्रकार प्रकार हुआ, इसका निर्णय कर सकना संप्रति असंभव है। अन्य रोगों की तरह इसके संक्रमण का तत्काल विस्फोट नहीं करता। उसकी गति इतनी मंद होती है कि संक्रमण के दो से पांच वर्ष बाद ही रोग के लक्षण उभरते हैं और तब शरीर का कोई भाग संवेदनहीन हो जाता है अथवा त्वचा पर चकते निकलते है या कान के पास अथवा शरीर के किसी अन्य भाग में गाँठ पड़ जाती है। इससे रोगी को तत्काल किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता। फलतः लोग इसकी ओर तत्काल ध्यान नहीं देते। रोग उभरने के बाद भी यह अत्यंत मंद गतिसे बढ़ता है और पूर्ण रुप से धारण करने में उसे चार-पांच बरस और लग जाते हैं। रोग के विकसित हो जाने के बाद भी रोगी सामान्यतः अपने को इस रोग से ग्रसित होने की कल्पना नहीं कर पाता। वह इस अवस्था में आलस्य, थकान, कार्य करने की क्षमता में कमी, गर्मी और धूप बर्दाश्त न हो सकने की ही शिकायत करता है। जब यह रोग और अधिक बढ़ता है तो धीरे-धीरे

मांसमज्जा क्षय (ड्राइ अव्सार्वशन) होने लगता है। जब वह हड्डी तक पहुंच जाता है तो हड्डी भी गलने लगती है और वह गलित कुष्ठ का रुप धारण कर लेता है। कभी जब संवेदना शून्य स्थान में कोई चोट लग जाती है अथवा किसी प्रकार का कट जाता है तो मनुष्य उसका अनुभव नहीं कर पाता, इस प्रकार वह उपेक्षित रह जाता है। इस प्रकार अनजाने ही वह व्रण का रुप धारण कर लेता है जो कालांतर में गलित कुष्ठ में परिवर्तित हो जाता है।

चिकित्सा :- इस रोग के संबंध में लोगों में यह गलत धारणा है कि यह असाध्य है। गलित कुष्ठ की वीभत्सता से समाज इतना आक्रांत है कि लोग कुष्ठ के रोगी को घृणा की दृष्टि देखते हैं और उसकी समुचित चिकित्सा नहीं की जाती और उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। वास्तविकता यह है कि कुष्ठ रोग से कहीं अधिक भयानक यक्ष्मा, हैजा और डिप्थीरिया है। यदि लक्षण प्रकट होते ही कुष्ठ रोग का उपचार आरंभ कर दिया जाए तो इस रोग से मुक्त होना निश्चित है।

मनुष्य स्वस्थ होकर अपना सारा कार्य पूर्ववत् कर सकता है। इस प्रकार कुष्ठ रोग होने के साथ-साथ एक सामाजिक समस्या भी है। उपेक्षित रोगी जीवन से निराश होकर प्रायः वाराणसी आदि तीर्थों एवं अन्य स्थानों पर चले जाते हैं जहां उन्हें रहने को स्थान और खाने को भोजन आसानी से मिल जाता है। वहां के भिक्षुक बनकर घूमते हैं। अतः चिकित्सा व्यवस्था के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि समाज में कुष्ठ के रोगी के प्रति घृणा के भाव दूर हों।

होमियोपैथी उपचार :- होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति पूरी तरह से लक्षणों पर निर्भर करती है। रोग नया हो या पुराना उसके मूल लक्षणों को खोजकर चुनी हुई औषधि देने पर किसी भी प्रकार के रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है, चाहे वो कुष्ठ रोग ही क्यों न हो। कई रोगियों को होमियोपैथी चिकित्सा कराकर लाभ मिला है, एवं कई रोगियों का इलाज चल रहा है। कंई रोगियों के प्रभावित अंगों में स्पर्श संवेदना वापस लाने में और घाव भरने में होमियोपैथिक दवा का चमत्कारिक लाभ मिला है।

पथ्य :- हरी सब्जियाँ, अखरोट, छाछ, गाजर आदि का सेवन करना चाहिए।

अपथ्य :- मसाले वाली चीजे, मांसाहार, अंडा, शराब, मिठाई, गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिए।

पता : भारत माता विद्यालय के सामने, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

"संस्कार"

कहा जाता था कि बच्चें अच्छे संस्कार
अपने परिवार से ग्रहण करते हैं।
वह सच्चाई तो आज भी कायम है
पर परिवारों की परिभाषा बदल गई है !
आज माईकों परिवारों का युग है
जिसमें केवल पति-पत्नि और बच्चा है
पति-पत्नि भागते काम पर जाते हैं
थक हार कर देर से लौट पाते हैं
उन्हें अपनी होश नहीं रहती है
वे बच्चे को किसी तरह पालते हैं
संस्कार देने आदर्श प्रस्तुत करने की
बात ही उनके ध्यान में नहीं आती है
बच्चा बमुश्किल तीन साल का होता है
कि प्ले स्कूल में डाल दिया जाता है
फिर तो वह कोचिंग होमवर्क की
भागमभाग में चक्करधिन्नी बन जाता है
उसके बाद अच्छे संस्कार देने लेने का
ख्वाब ख्याल ही कब किसको आता है ?

०-०

ओमप्रकाश बजाज
पो.बा. ५९५, जीपीओ, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

समाचार प्रवाह

ऋषि बोधोत्सव व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान के पावन अवसर पर विश्व शान्ति महायज्ञ व वार्षिक उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रायपुर। ऋषि बोधोत्सव व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान के पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्यसमाज टाटीबन्ध के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दिनांक २३ व २४ फरवरी २०१९ को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न हुआ।

विशाल प्रभात फेरी

दिनांक २३ फरवरी २०१९ शनिवार को प्रातःकाल ८.०० बजे से शोभा यात्रा महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध से बस्ती से गुरुद्वारा होते हुये एम्स के सामने से जी.ई. रोड पर ऋषि दयानन्द के जय-जयकार करते हुये एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को संस्मरण करते हुये १००० बालक-बालिकाएं, शिक्षक-शिक्षिकायें, प्रबुद्ध नागरिकों एवं सभा के पदाधिकारियों द्वारा लगभग २ घंटे के भ्रमण के बाद विशाल शोभा यात्रा समाप्त हुआ।

ध्वजोत्तोलन, यज्ञ, भजन, प्रवचन

तदोपरान्त १०.३० बजे ओ३म् ध्वजोत्तोलन किया गया, आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। तद्परान्त विश्व शान्ति महायज्ञ सभा प्रधान के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ, जिसमें पं. काशीनाथ चतुर्वेदी रायपुर सहित वेदपाठी के रुप में पं. संजय शास्त्री एवं गुरुकुल के आचार्य एवं ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में दोपहर २ से ५ बजे तक सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य का संगीतमय वैदिक भजन एवं पं. नंदकुमार आर्य का सुमधुर संगीतमय भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मंच पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य कोषाध्यक्ष सभा आदि सभा के पदाधिकारीगण, पं. काशीनाथ चतुर्वेदी, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्री लोकनाथ आर्य आदि आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे। विश्व शान्ति महायज्ञ के मुख्य यजमान के रुप में श्री विनोदसिंह प्राचार्य सपत्नीक, श्री पुरुषोत्तम वर्मा उपाचार्य सपत्नीक, आर्यसमाज टाटीबन्ध के श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा सपत्नीक एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहे। दर्शक दीर्घा में लगभग हजारों आर्यजन एवं विद्यालय के छात्र-छात्रायें उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति दिए

बोधोत्सव व श्रद्धानन्द बलिदान संस्मरण दिवस

दिनांक २४ फरवरी २०१९ रविवार को प्रातः ८ बजे विश्व शान्ति महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई, जिसमें मुख्य यजमानों, शिक्षक-शिक्षिकाओं व छात्र-छात्राओं द्वारा यज्ञ की वेदी पर वैदिक मंत्रों द्वारा आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बने। यज्ञ के ब्रह्मा सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य रहे। अपनी टीम के साथ संगीतमय हवन के सूत्रधार आचार्य जी ने यज्ञोपरान्त यज्ञ के महत्व पर सारगर्भित उपदेश प्रदान किया। इस अवसर पर महायज्ञ में विशेष आमंत्रित अग्निदूत के यशस्वी सम्पादक आचार्य कर्मवीर जी ने यजुर्वेदीय मन्त्र- देव सवितः प्रसुव यज्ञं.... के माध्यम से संगठित समाज की रुपरेखा रखते हुए भावी पीढ़ी के सही निर्माण पर विशेष बल दिया। आचार्य बलदेव जी राही ने स्वामी श्रद्धानन्द एवं दयानन्द बोध पर बड़े छात्रोपयोगी विचार प्रस्तुत किए। केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापक आचार्य प्रेमप्रकाश जी ने वेदपथ पर चलने की प्रेरणा दी, वैदिक विद्वान आचार्य शिवशंकर शास्त्री जी ने आचरणात्मक शिक्षा पर जोर दिया। प्रेरक भजनों के माध्यम से पं. नन्दलाल जी ने उपस्थित जनत का मन मोहा। इस अवसर पर पं. काशीनाथ चतुर्वेदी जी, आचार्य पंकज जी, ऋषिराज आर्य प्रवृति विद्वद जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पधारे समस्त आमंत्रित विद्वजन एवं सभा बाड़ा लवन, कूरा, ढाबा के प्रबंधक व विद्यालय लवन, कूंरा के शिक्षक-शिक्षिकाओं का श्रीफल एवं साहित्य सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मान किया गया एवं कूरा विद्यालय के छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

पूर्णाहुति उपरान्त ऋषि लंगर में हजारों श्रद्धालुओं ने भोजन के रुप में प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज राजेन्द्रनगर, कटोरातालाब, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर, रायपुर सहित अन्य आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री दयाराम वर्मा, श्री केवलकृष्ण ब्रिज, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्रीमती रामेश्वरी माता, श्रीमती मन्जु माता, श्री भुवनेश्वर प्रसाद वर्मा, श्री छबिलसिंह रघुवंशी, श्री दयालदास आहूजा, श्रीमती माला कुकरेजा, श्री जोगेन्द्र कुमार सोनके, श्रीमती संगीता सिंह, कु. संजू साहू, श्रीमती निर्मला वर्मा, श्रीमती राजश्री मरजीवे, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम का विशेष सहयोग रहा। विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह जी तथा उनका पूरा विद्यालय परिवार के अथक परिश्रम से यह विशाल कार्यक्रम सफलता की ऊंचाई प्राप्त कर सका।

- संवाददाता : निजी संवाददाता

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम का १७वाँ वार्षिकोत्सव व १०१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

नूआँपालि (बरगड़) उड़ीसा। गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ नूआँपालि, बरगड़, ओड़िशा में गुरुकुल का १७वाँ वार्षिकोत्सव समारोह एवं १०१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक १८ व १९ फरवरी २०१९ सोमवार व मंगलवार को सोल्लास सम्पन्न हो गया। दिनांक १८ फरवरी १९ को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला, मेरठ (उ.प्र.) के श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में १०१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ। इसी दिन वैदिक शिक्षा सम्मेलन, समाज निर्माण सम्मेलन व विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सम्पन्न हुआ। दिनांक १९ फरवरी १९ को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के साथ योग सम्मेलन व ग्रामोत्थान सम्मेलन तथा ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों का शारीरिक बल प्रदर्शन हुआ। इस अवसर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य विशेष रुप से कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभा की ओर से ११,०००/- रुपये का आर्थिक सहयोग गुरुकुल आश्रम नवप्रभात को प्रदान किया गया।

-- कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा

अग्निदेव आर्य कन्या शाला धमतरी में कम्प्यूटर लैब उद्घाटित

धमतरी। दिनांक २३-२-२०१९ को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वामी अग्निदेव आर्य कन्या शाला मकई चौक, धमतरी में रोटरी क्लब ऑफ धमतरी के सौजन्य से नवनिर्मित कम्प्यूटर लैब व लायब्रेरी का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर मुख्य अतिथि रोटरी क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. निखिलेश त्रिवेदी, विशिष्ट अतिथि पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर शशि वरवंडकर, सेक्रेटरी जनरल सुभाष टोले, डॉ. एल.एन. महावर, आर.के. साहू, विद्यालय संचालन समिति के श्री सत्यकाम आर्य, पूर्व अध्यक्ष अमित जायसवाल, अध्यक्ष नन्दन दोषी थे। रोटरी क्लब के सचिव ने बताया कि रोटरी क्लब के ११४ वर्षगांठ (विश्व रोटरी दिवस) के अवसर पर क्लब ने अपने गोदित अग्निदेव आर्य कन्या शाला में कम्प्यूटर लैब का निर्माण कर वहां तीन नग कम्प्यूटर, एक प्रिंटर स्थापित किया है। साथ ही बच्चों के लिए छोटी लायब्रेरी बनाई गई है। पाठशाला के एक कमरे को यह रुप दिया गया है। कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका सीमा शिन्दे, वर्षा पवार, क्लब सचिव संजय अग्रवाल, पूर्व सचिव अमित जायसवाल, आशीष गोयल, डॉ. एल.एन. महावर, विजयलक्ष्मी महावर सहित अन्य सदस्य व विद्यालय शिक्षिका व बच्चें काफी तादाद में उपस्थित थे।

राजिम मेला में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वेदप्रचार कार्य सम्पन्न

राजिम। दिनांक १ मार्च २०१९ को वैदिक गुरुकुल टाटीबन्ध के वेदपाठी बटुक के साथ वेदाचार्य श्री राजबहादुर एवं आचार्य पंकज के टीम द्वारा प्रातः ८ बजे १० बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ दोपहर १ बजे से सायं ४ बजे तक संगीतमय भजन व प्रवचन व सायं ४ से ६ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ सायं ६ बजे से रात्रि ८ बजे तक संगीतमय भजन व प्रवचन यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान द्वारा आचार्य संजय शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ। रायगढ़ से पधारे हुए वैदिक आर्केस्ट्रा द्वारा सुमधुर भजन की प्रस्तुति आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कमार आर्य, श्री सी.एस. रघुवंशी मंत्री आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर अपने समूह के साथ तथा डॉ. निषाद विशेष रुप से यज्ञ स्थल पर उपस्थित हुए।

दिनांक २ मार्च २०१९ को महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के कक्षा ९वीं एवं ११वीं के लगभग ५० छात्र-छात्राएँ के साथ में स्टाफ में जिसमें प्राचार्य विनोद सिंह एवं उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा की टीम विश्व कल्याण महायज्ञ स्थल पर पहुंचे। स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती जी का आशीर्वाद यज्ञ स्थल पर श्री विनोद जायसवाल के सौजन्य से प्राप्त हुआ। सभा के प्रचारक श्री रामनाथ आर्य सहित लगभग १६ वानप्रस्थियों का समूह यज्ञ स्थल उपस्थित होकर विश्व कल्याण महायज्ञ को सफल में बनाने में विशेष सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

दिनांक ३ मार्च २०१९ को प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ हुआ। सुबह ११ बजे से १ बजे तक पं. ऋषिराज आर्य द्वारा संगीतमय वैदिक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम हुआ, जिसमें तुलाराम आर्य हाई स्कूल लवन से प्रबंधक श्री रामकुमार वर्मा, प्राचार्य श्रीमती मंदाकिनी ताम्रकार सहित शिक्षक-शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं सहित अन्य गणमान्य आर्यजन यज्ञ स्थल पर उपस्थित रंहे।

दिनांक ४ मार्च २०१९ को ऋषि बोधोत्सव व महाशिवरात्रि पर्व के अवसर विश्व कल्याण महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। तत्पश्चात् सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा संगीतमय भजन व उपदेश हुआ, उन्होंने ऋषि बोधोत्सव पर सारगर्भित उपदेश प्रदान किए। इस अवसर पर मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, आर्यसमाज टाटीबन्ध, बैजनाथपारा रायपुर के पदाधिकारीगण व अन्य कार्यकर्ता गण एवं सभा बाड़ा कूरा के प्रबंधक श्री सुधीर दुबे, तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी कूंरा के प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राओं सहित आसपास के गणमान्य श्रद्धालुगण भारी संख्या में उपस्थित रहे।

-निजी संवाददाता

नवनिर्मित आर्यसमाज मंदिर कमलविहार रायपुर का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

रायपुर। दिनांक ३-३-२०१९ रविवार को आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सौजन्य से नवनिर्मित आर्यसमाज मंदिर, ए-१६४, रायपुर का लोकार्पण समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः ९ बजे से १० बजे तक यज्ञ हवन एवं १० बजे से १२ बजे तक पं. नन्दलाल आर्य का सुमधुर भजन प्रवचन भी सम्पन्न हुये। दोपहर १२ बजे लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री ताम्रध्वज जी साहू मंत्री लोकनिर्माण, गृह जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यजन एवं संस्कृति छ.ग., अध्यक्षता श्री दयाराम वर्मा, प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर छ.ग. विशिष्ट अतिथिगणों आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान छ.ग.प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री छबिलसिंह रघुवंशी मंत्री आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं सम्मानिथि अतिथि के रुप में श्री सी.एल. यादव अध्यक्ष आर्य शिक्षण समिति रायपुर, श्री भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा सचिव आर्य शिक्षण समिति रायपुर उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आर्यसमाज

बैजनाथपारा रायपुर के समस्त पदाधिकारी, सदस्यगण व पुरोहित, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर के समस्त पदाधिकारीगण व सदस्यगण, आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण, महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय के समस्त स्टॉफ व छात्र-छात्राएँ, श्रद्धानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर रायपुर के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ व आचार्य कर्मवीर शास्त्री सम्पादक अग्निदूत सहित अन्य आमंत्रित गणमान्य आर्यजनों की शताधिक संख्या में गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सभी आमंत्रितों के लिये ऋषि लंगर आयोजित की गई थी।

- निजी संवाददाता

मनुष्यों को कैसा होना चाहिए ?

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥

भावार्थ - जो मनुष्य जगदीश्वर के आश्रय और आज्ञा पालन से विद्वान, धार्मिक आप्त पुरुषों के संग से अति पुरुषार्थी होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये प्रयत्न करते हैं वे समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त कर भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में सुखी रहते हैं।

आर्यसमाज बड़ेपन्धी के प्रधान वैष्णव भोई का देहावसान

बड़ेपन्धी (महासमुन्द)। आर्यसमाज बड़ेपन्धी के प्रधान श्री वैष्णव भोई का आकस्मिक निधन दिनांक १९ फरवरी २०१९ मंगलवार को हो गया, जिसका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा किया गया, जिसमें सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य सभा की ओर एवं अन्य ग्रामीण आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। श्री वैष्णव भोई सभा के अंतरंग सदस्य श्री आनन्द भोई के पिताश्री है। अपने पीछे भरपूरा परिवार छोड़कर चले गये। शांति यज्ञ पं. संजय शास्त्री द्वारा दिनांक २१ फरवरी २०१९ को किया गया। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार उनकी आत्मा की सद्गति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। **अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

राजिम में सम्पन्न ऋषि बोधोत्सव व महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर विश्व कल्याण महायज्ञ की चित्रमय झलकियाँ

॥ओ३म्॥

॥ विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ (वेद) विद्या से अमृत्व की प्राप्ति होती है।

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय

जी.ई. रोड, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

छ.ग. शासन–शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त (पंजी. क्र. 182057)

संचालित : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

विद्या ददाति विनयम्

प्रवेश प्रारम्भ

शिक्षा सत्र : 2019–20

हिन्दी माध्यम

कक्षा पहली से दसवीं

कक्षा ग्यारहवीं–बारहवीं

(गणित, जीव–विज्ञान, कामर्स, कला)

हमारा संकल्प

शिक्षा के साथ

वैदिक संस्कार

दैनिक संध्या, हवन,

बौद्धिक विकास के साथ

नैतिक विकास

ENGLISH MEDIUM

Nursery,

PP-I, PP-II

STDI to IX

सम्पर्क : कार्यालय : 0771–2572013, प्राचार्य : 9179509030, सचिव : 9826363578

विद्यालय पहुँच हेतु वाहन सुविधा उपलब्ध

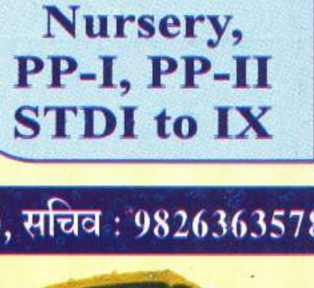

CHH-HIN/2006/17407 मार्च 2019 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सदस्य क्र. 206
आर्य संदेश (साप्ताहिक)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15
हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001